रविवार

32 साल से देहरादून का विश्वास

20 अक्टूबर 2024

- देहरादून
- वर्ष 32
- अंक 250
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

एक नजर

रोहिणी में सीआरपीएफ स्कूल की दीवार के पास हुआ बड़ा विस्फोट

नई दिल्ली। दिल्ली के रोहिणी में सीआरपीएफ स्कूल की दीवार के पास आज सुबह बड़ा विस्फोट हुआ, जिसके बाद इलाके में धुआं भर गया। मौके पर फायर ब्रिगेड की टीम तुरंत पहुंची, लेकिन सौभाग्य से इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ।

इस विस्फोट के कारणों का पता लगाया जा रहा है। एजेंसियां जांच में जुटी है, लेकिन इस बीच धमाके का वीडियो सामने आया है। 30 सेकंड के वीडियो क्लिप में देखा जा सकता है कि किस तरह दीवार के पास ट्रिगर हुआ, थोड़ा धुआं उठा और फिर तेज ब्लास्ट हो गया। धमाका किसने किया, कैसे किया और क्या मकसद था, इस सभी पहलुओं की जांच की जा रही है। इस मामले की जांच एनआईए, स्पेशल सेल और अन्य टीमों कर रही हैं।

सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में विस्फोट के बाद पूरा क्षेत्र धुएं से भरता हुआ देखा जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक, यह एक डायरेक्शनल विस्फोट था और इसे रोहिणी के इस स्थान से दो किलोमीटर दूर तक सुना गया। विस्फोटक इस तरह से लगाए गए थे कि इससे एक शॉकवेव इफेक्ट पैदा हुआ, जिसने आसपास की इमारतों और वाहनों के विंडोज भी चकनाचूर हो गए।

सूत्रों ने बताया कि शॉकवेव बहुत ज्यादा हवा के दबाव से बनता है, और इसकी आवाज सुपरसोनिक स्पीड के साथ फैलती है। यही वजह है कि आसपास की इमारतों के विंडोज भी टूट गए। अब तक की जांच में मौके पर किसी धातु जैसी सामग्री, बॉल बेयरिंग या इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट्स नहीं मिले हैं और स्कूल की दीवार का इस्तेमाल विस्फोट करने के लिए जानबूझकर किया गया था।

करोड़ों की स्मैक के साथ दंपत्ति सहित तीन लोग गिरफ्तार

संवाददाता

रुद्रपुर। उधम सिंह नगर पुलिस ने करोड़ों की स्मैक के साथ दंपती सहित तीन स्मैक तस्करों को गिरफ्तार किया है। थाना पुलभट्टा क्षेत्र से पकड़ी गई एक किलो 58 ग्राम स्मैक की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लगभग तीन करोड़ रुपए से भी अधिक है। पुलिस अधीक्षक नगर रुद्रपुर, क्षेत्राधिकारी सितारगंज के निर्देशन में थानाध्यक्ष थाना पुलभट्टा के नेतृत्व मे गठित टीम द्वारा रात में सघन वाहन चैकिंग में शंकर फार्म कट के पास से एक कार बैगनार यूपी 14 सीएफ 9528 को पकडा। कार मे सवार लोगों से पूछताछ व तलाशी लेने पर तीनों से एक किलो 58 ग्राम स्मैक बरामद हुई है।

एसएसपी मणिकांत मिश्रा के अनुसार, पकड़ी गई स्मैक की कीमत करीब तीन करोड़ है। इनमे एक आरोपी शानू निवासी फतेहगंज पश्चिमी बरेली, काशीपुर निवासी दंपती खुर्शीद और आसमा को स्मैक सप्लाई करता था। शानू अब तक जिले में तीन साल में 30 किलोग्राम स्मैक सप्लाई कर चुका है। तीनों लोग वेगनार कार से बरेली से जिले में आ रहे थे। इस दौरान चेकिंग के समय पूछताछ में तीनों को स्मैक के साथ पकड़ा गया।

आरोपियों ने बताया कि वो बरेली के फतेहगंज से स्मैक लेकर आए थे , जिसे वो सितारगंज में सप्लाई करने जा रहे थे। आरोपी खुर्शीद और महिला पति-पत्नी हैं, जो पहले भी एनडीपीएस में कई बार जेल जा चुके हैं ,जिस रिफाकत से स्मैक लेकर आए थे, वो भी कई बार जेल जा चुका है। रिफाकत की पत्नी भी कई बार जेल की हवा खा चुकी थी। बताया जा रहा है कि रिफाकत की पत्नी की मौत हो चुकी है वहीं, पूछताछ में अन्य आरोपियों के नाम भी सामने आए हैं।

गिरफ्तार अभियुक्त सानू पुत्र रहीश अहमद निवासी मोहल्ला अंसारी वार्ड नम्बर 08 रामकटोरी के पास फतेहगंज पश्चिमी थाना फतेहगंज पश्चिमी जिला बरेली उत्तर प्रदेश, खुर्शीद पुत्र अली हसन निवासी अलीखाँ मोहल्ला हजरतनगर थाना काशीपुर जिला उधमसिहनगर, आसमा पत्नी खुर्शीद निवासी अलीखाँ मोहल्ला हजरतनगर थाना काशीपुर जिला उधमसिहनगर हाल पता ग्राम मिसरवाला थाना कुण्डा उधमसिहनगर शामिल हैं।

गिरफ्तारी पुलिस टीम में थानाध्यक्ष रविन्द्र सिह विष्ट , उपनिरीक्षक पंकज कुमार, उपनिरीक्षक धीरज वर्मा , उपनिरीक्षक रिनी चौहान , हेड कांस्टेबल धरमवीर सिह, कांस्टेबल महेन्द्र सिह बिष्ट , कांस्टेबल दीपक विष्ट,कांस्टेबल चारू पन्त, महिला कांस्टेबल ममता शामिल थे।

यादों भरी जिंदगी

श्वेता तिवारी

'वक्त की ख़ासियत ही यही होती है कि वो एक जैसा नहीं रहता, बदलता रहता है'-बचपन से ही ये बात सुनती आ रही हूं, फिर भला ये चीखों से भरा वक्त क्यों नहीं गुज़र रहा? हर किसी की ज़िंदगी में 'तुम' होता है और उस 'तुम' के साथ सबके रिश्ते अलग-अलग, रूप अलग-अलग, उससे मिलने वाले अहसास अलग-अलग होते हैं...। कैसे बोलें कि किसका दर्द ज्यादा है? कई बार ये 'तुम' घर का ही कोई अपना होता है तो कई बार करीबी रिश्तेदार। किसी के भी 'तुम' का जाना बेचैनी दे सकता है पर वो बेचैनी चार-पांच दिन में थोड़ी-थोड़ी शांत भी हो जाती है। आखिर कोई कब तक उस दुख में बना रहेगा, पर उनका क्या, जिनका 'तुम' गया...वो अटक जाते हैं...। बिना शब्द के...। बिना आंसू के। एक सूनेपन में...। कुछ ऐसे रिश्ते भी होंगे, जो पहले हुआ करते थे, अब नहीं हैं और उनके जाने की खबर आप तक शायद कभी पहुंचे भी नहीं, पर ख़याल में वो आ ही जाते हैं। किसके सामने जाकर रोएं और रोने की वजह तो क्या ही बताएं? कभी मां-बाप चले गए, बच्चे रह गए, तो कभी बच्चे रह गए और मां बाप चले गए...जो बिना किसी सहारे कुछ नहीं कर सकते, उनका 'तुम' चला जाए, तब?

लोग जाते हैं और हम दर्द में आते हैं। उसके बाद बस बातें, किस्से और यादें रह जाती हैं। आखिर कोई रोए भी कितना और कब तक? दिल का दर्द हमेशा आंसुओं में नहीं निकल सकता...वो कभी-कभी लबों की मुस्कुराहट में भी रहता है, जिसे देख पाना हर किसी के लिए मुमकिन नहीं...। बहुत सारी चीज़ें लिखी और कही गई हैं पॉज़िटिव रहने के लिए, पर इन सबके बाद भी कुछ डर ऐसे होते हैं, जो दिल के एक कोने में जगह बनाकर बैठ जाते हैं। मैं ये जानती हूं कि हम हमेशा जैसे रोते नहीं रह सकते, वैसे ही हमेशा डर में भी नहीं रह सकते। निकलना ही होगा इससे... आगे बढ़ना ही होगा... जो अपने हाथ में ही नहीं, उस पर कैसे काबू पा सकते हैं? तो चलिए, निहारते हैं उस रिश्ते को, जो अभी आपके पास है...। ...बरसों से बहुत कुछ जमा करके रखता है मन, उसे खाली करते हैं...। बेचैनी, डर, दर्द, आंसू...मिलते ही रहेंगे ज़िंदगी में...। किसी के जाने के बाद उसकी यादों और बातों का सहारा लेना ही पड़ेगा...। अजीब-सी ही बात है कि ज़िंदगी यादों से भरी रहती है, पर फिर भी खाली होती है। हमें 'तुम' को जीवित रखना पड़ता है, हमारे लिए... हमें खुद ही भरने पड़ेंगे हमारे मन के पन्ने, उन शब्दों से, जिन्हें हम हमेशा से लिखना चाहते थे... 'तुम' बस ज़िंदा रहना...।

सादगी के श्रृंगार में आईने की हार

शमीम शर्मा

एक सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर ने अपनी दुकान के बाहर लगे साइनबोर्ड पर लिखवा रखा था :-

40 रुपये में - आप जैसे हैं, हुबहू वैसी ही फोटो खिंचवायें।

50 रुपये में - आप जैसा सोचते हैं, वैसी फोटो खिंचवायें।

60 रुपये में - आप जैसा लोगों को दिखना चाहते हैं, वैसी फोटो खिंचवायें।

कहते हैं कि बाद में उस फोटोग्राफर ने अपने संस्मरणों में लिखा कि जीवनभर उसने फोटो खींचने का काम किया पर किसी ने 40 रुपये वाली फोटो नहीं खिंचवायी। सबसे अधिक संख्या उन लोगों की रही जिन्होंने 60 रुपये वाली फोटो खिंचवायी।

बस जिंदगी भी इस फोटोग्राफर के संस्मरण जैसी है। जीवन की हकीकत यही है कि हम हमेशा दिखावे के लिये जीते हैं। हमने कभी 40 रुपये वाली यानी कि सच्ची-सीधी जिंदगी जी ही नहीं। यह बात भी माननी पड़ेगी कि सादगी में लोग किसी को चैन से जीने भी नहीं देते। मेरे ख्याल में सादगी का दौर कभी आया ही नहीं। दिखावे की जिंदगी जीने में बहुत जोर लगता है जबकि सहज-सरल जीना बहुत ही अनायास है, जिसके लिये कोई प्रयास करना ही नहीं पड़ता। मेरी एक सहेली है जो बिना लिपस्टिक लगाये घर से बाहर ही नहीं निकलती। पर उसका यह भी कहना है कि किसी भी समारोह में सजधज कर जाने के बाद जब वह घर लौटती है और सारा मेकअप उतार कर मुंह धोती है तो परम सुख मिलता है। सच तो यह है कि जीने की तैयारी में ही हम जिंदगी गुजार देते हैं।

चेहरे पर चेहरे और मुखौटों पर मुखौटे तान कर हम इतने बहुरूपिया हो गये हैं कि अपनी असलियत को हम भूल ही चुके हैं। परेशान वे भी कम नहीं होते जो उम्मीदों की बजाय जिद पर जीते हैं। जिस दिन सादगी शृंगार हो जायेगी उस दिन आईने की हार हो जायेगी। पर आज तक की सच्चाई यह है कि बड़े तो बड़े, बच्चे भी आईने के सामने आड़े-तिरछे होकर स्वयं को पांच-सात बार निहार कर आत्ममुग्ध होते हैं। गुलजार ने कहा है-आईना देखकर तसल्ली हुई कि हमको इस घर में जानता है कोई। कहावत है कि कांच पर पारा चढ़ाओ तो आईना बनता है और किसी को आईना दिखा दो तो पारा चढ़ जाता है।

वेद वाणी

इन्द्रो वसुभि: परि पातु नो गयमादित्यैर्नो अदिति: शर्म यच्छतु।

रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नस्त्वष्टा नो ग्नाभि: सुविताय जिन्वतु।।

ऋग्वेद १०-६६-३

इंद्र आठ वसुओं के साथ हमारे गृह की रक्षा करें और उन्नति प्रदान करें। अदिति सभी बारह आदित्यों के साथ हमें सुख और शांति प्रदान करें। अग्नि अपने ग्यारह रुद्रों के साथ अपनी कृपा हम पर रखें। सूर्य अपनी दिव्य शक्तियों के साथ हमें प्रसन्नता और शांति प्रदान करें।

आम नागरिकों को कब सुलभ होंगे मानवाधिकार!

विकास कुमार

प्रत्येक वर्ष 10 दिसंबर को विश्व मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह पहल संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 10 दिसंबर ,1948 से की गयी थी। 1939 से 1945 द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात वैश्विक राजनीति के चिंतकों एवं विचार को ने मानवीय गरिमा एवं मनुष्य के मूलभूत अधिकारों से ओतप्रोत होकर इस नवाचार की पहल को संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धांतों एवं उद्देश्य में लागू किया। तत्पश्चात सदस्य देशों को भी निर्देशित किया गया की वह अपने देश में मानवाधिकार से संबंधित आयोग कि स्थापना करें जो देश में रहने वाले नागरिकों के मूलभूत अधिकारों की रक्षा कर सकें जिनको सरकारें और शासन नकार देती हैं एवं अनदेखा कर देती हैं। भारत में भी इस अनुक्रम को अपनाते हुए 1993 में मानवाधिकार आयोग की स्थापना की गई जिसका कार्य नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है।

यह एक यात्रा का परिणाम है सर्वप्रथम 1215 में ब्रिटेन में मैग्नाकार्टा के रूप में नागरिकों के कुछ अधिकारों को सुनिश्चित किया गया था। यही पहल अमेरिका के स्वतंत्रता की घोषणा पत्र 1776 में मानव गरिमा को प्रमुख मानते हुए अधिकारों को सक्रियता प्रदान की गई थी। यही कारण रहा कि अमेरिका जैसे विकसित देश ने संविधान अपनाते समय मौलिक अधिकारों का समायोजन एवं संकलन अपने संविधान में किया। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के नारे पर हुई थी जिन में मानवाधिकारों के मूलभूत प्रावधान देखने को मिलते हैं। 1946 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया एवं 1948 में सार्वभौमिक रूप से मानव अधिकार दिवस की घोषणा की गई। इन्हीं आयामों से संबंधित 1949 में जिलों में संधि हुई तथा 1950 में मानव अधिकार तथा मौलिक स्वतंत्रता ओं के संरक्षण हेतु यूरोपीय संधि हुई। इसी प्रक्रिया में 1961 में यूरोपीय सामाजिक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर की हुई तथा 1966 में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय संधि ,नागरिक एवं राजनैतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय संधि, नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों से जुड़ी ऐच्छिक संधि का प्रावधान किया गया। इस प्रकार से आधुनिक समय में मानव अधिकारों का विकास हुआ। भारत में 1993 के अधिनियम के द्वारा राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग एवं राज्य के मानव अधिकार आयोग से संबंधित प्रावधान किए गए। मानव अधिकार आयोग के धारा 2(1) स्र में प्रावधान मिलता है कि जो मानव गरिमा एवं मानव सम्मान को प्रबलता प्रदान करते हैं ऐसे अधिकारों को मानव अधिकार की श्रेणी में रखा जाएगा। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी कई मामलों में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 एवं भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 को मानवाधिकार से संबंधित बताया है। संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन के अधिकार से संबंधित है जिसमें जीवन से संबंधित इन मूलभूत अन्य अधिकारों की भी वृहद एवं विस्तृत चर्चा की गई है। कई अन्य मामलों की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कई प्रकार की श्रेणियों के अधिकारों को अनुच्छेद 21 में सम्मिलित करने का निर्देश देते रहे हैं। आज विश्व सार्वभौमिक रूप से मानव अधिकारों की अवधारणा को अपना चुका है।

यह कहना बिल्कुल सत्य है कि इस अवधारणा को अपनाने के पश्चात मनुष्य में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं उनके अधिकार कुछ हद तक सुरक्षित एवं संरक्षित हुए हैं परंतु जिस संरचना के संरक्षण के तहत इनकी परिकल्पना की गई थी क्या वह आज साकार होते दिख रहे हैं? यह समाज और शासन दोनों के समक्ष एक बड़ा प्रश्न है? जिसको ना अकादमिक जगत के लोग, नाही न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े लोग और स्वयं मानव अधिकारों के सक्रिय लोग भी इसको नकार नहीं सकते। सामान्य तौर पर शिक्षित नागरिकों के भी अधिकार सुरक्षित होते नहीं दिखाई दे रहे हैं कई प्रकार के मानवाधिकारों से मेल न खाने वाली गतिविधियों का प्रयोजन बता कर उनके अधिकारों को ठेस पहुंचाई जाती है। यहां पर एक पक्ष लेना उचित नहीं होगा। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि कई संगठन और राजनेताओं का जत्था मानवाधिकारों की दुहाई देकर प्रशासन की गरिमा को भी ठेस पहुंचाते हैं। परंतु यह अल्प संख्या में होता है। गरीब लोगों को नाही कानून की जानकारी होती है और ना ही मानवाधिकारों की। छोटे से छोटे काम के लिए उनसे व्यापक रूप से रिश्वत ली जाती है। फुटपाथ पर सोने वाले बिहारी मजदूरों से वसूली की जाती है। रिक्शा चलाने वाले दैनिक रूप से दो से ?300 कमाने वाले असंगठित मजदूर से छोटे से कानून के उल्लंघन पर पैसा लिया जाता है। किसानों के क्रेडिट कार्ड बनवाने एवं सरकारी योजनाओं से लाभान्वित प्रक्रिया में पहले से ही परसेंटेज तय कर दिया जाता है। आवास एवं सरकारों द्वारा संचालित आवंटित राशन में कई तकनीकी समस्याओं का हवाला देकर परेशान किया जाता है। सरकारी अस्पतालों में अच्छी दवा लेने के लिए डॉक्टर को अलग से पैसा देना होता है। एक ग्लोबल सूचकांक के अनुसार एवं यूएनडीपी के रिपोर्ट के अनुसार 27 फ़ीसद से अधिक भारत की जनसंख्या मूलभूत प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य से वंचित है। आज भ्रष्टाचार का स्तर बढ़ता जा रहा है, लोकतांत्रिक शासन प्रक्रिया में आम नागरिकों को महत्वहीन समझा जा रहा है। केवल मतदान के समय ही उसका महत्व समझा जाता है। कई प्रकार के प्रोटोकॉल और कानूनों को केवल आम नागरिकों पर ही लागू किया जाता है। आज तक किसी सामंत, बड़ेघराने, राजनेताओं एवं पूंजी पतियों को किसी भी प्रकार की गतिविधियों में लाइन में खड़े होते हुए नहीं देखा गया है। जब तक मानव अधिकारों का प्रावधान आम जनमानस को नहीं मिलेगा तब तक तब तक मानव अधिकारों का श्रेष्ठ उद्देश्य साकार नहीं होगा। क्योंकि यह अधिकार संपूर्ण मानव के विकास के लिए एवं मानवता के रक्षा के लिए निर्धारित किए गए हैं। यदि किसी वर्ग विशेष को इससे वंचित रखा जाएगा तो इनका सिद्धांत और सपना अधूरा रह जाएगा। संस्थाओं और सरकारों को चाहिए कि मानव अधिकारों से संबंधित गतिविधियों को कानून पर आधारित प्रक्रिया के माध्यम से संचालित करें। जिससे विधि का शासन सुनिश्चित होगा और लोकतंत्र अधिक मजबूत बन सकेगा। 1992 के पश्चात नागरिक समाज कि अधिक सक्रियता और गतिविधियों को सुनिश्चित करने के लिए सुशासन की अवधारणा लोकतंत्र में सुनिश्चित हुई जिसमें मानवाधिकार से संबंधित संरक्षण का प्रावधान एक अहम मूल्य है। क्योंकि मानवाधिकारों का मूल्यांकन शासन की जवाबदेही, उत्तरदाई, विधि के शासन, संविधानवाद, एवं मानव गरिमा को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए किया जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव अधिकारों का लाभ संपूर्ण मानव समुदाय को मिले। इसके प्रति सभी जागरूक हूं। तभी वास्तविकता मानवाधिकारों के उद्देश्यों का सपना साकार हो सकेगा।

(लेखक- केंद्रीय विश्वविद्यालय अमरकंटक में रिसर्च स्कॉलर हैं एवं राजनीति विज्ञान में गोल्ड मेडलिस्ट है।)

आभासी दुनिया के भरोसे ज्ञान

शमीम शर्मा

एक ऐसा भी बेड साइड साथी है, जिसके लिये स्वीकारोक्ति में कहा जा सकता है कि गुमशुदा की तलाश है। पर यदि कोई इस साथी को ढूंढ़कर ला भी दे तो भी उसकी हैसियत अब बेड साइड साथी की नहीं रही। वह हमेशा के लिये आपको छोड़कर जा चुका है। विडम्बना इस बात की है कि कोई उसे ढूंढ़ने के लिये ज़रा भी प्रयासरत नहीं है। मेरा इशारा डिक्शनरी की तरफ है। वह भी ज़माना था जब डिक्शनरी हर विद्यार्थी की साथी हुआ करती और बेड साइड में सजी रहा करती। स्कूल-कॉलेजों के फंक्शन में मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार स्वरूप आमतौर से डिक्शनरी मिला करती। विवाह पश्चात का अपना एक जन्मदिन याद है जब मेरे जीवनसाथी ने मुझे मेरी ड्रीम डिक्शनरी उपहार स्वरूप दी थी। यह थी 'रेंडम हाउस वेबस्टर्स कॉलेज डिक्शनरी'।

मैंने हमेशा पाया कि एक-दो डिक्शनरी मेरे पापा के सिरहाने सदा रखी रहा करतीं। इसके बाद यही आदत मेरी हो गई। पहले मेरे पास सालों साल तक भार्गव डिक्शनरी हुआ करती और झट से अंग्रेजी के शब्दों का हिन्दी में अर्थ देख लिया करती। दरअसल यह वह समय था जब अंग्रेजी शब्दों का अर्थ अंग्रेजी में समझ ही नहीं आया करता। बाद में तो लोंगमैन, कॉलिन्स, ऑक्सफोर्ड, मैकमिलन आदि डिक्शनरी देखने का चस्का लग गया था। डिक्शनरी से प्यार होने का कारण पापा का सख्त रवैया था। आठवीं-नौवीं में पढ़ते हुए जब भी किसी अंग्रेजी शब्द का अर्थ पूछती तो जवाब मिलता कि डिक्शनरी देखो। उनके इस सुझाव पर बहुत खीझ मच जाया करती। उनका तर्क था कि डिक्शनरी में अर्थ ढूंढते हुये आगे-पीछे वाले चार-पांच और शब्दों से भी परिचय हो जाता है। तब तो उनका यह तर्क कभी नहीं सुहाया पर बाद में बहुत सार्थक लगा। अब डिक्शनरियों की दुर्गति हो चुकी है। मैंने पिछले कई सालों से किसी विद्यार्थी को डिक्शनरी से झक मारते हुये नहीं देखा। गूगल से पूछकर शब्दों की उलझन को सुलझाने के हम सब आदी हो चुके हैं। विलोम शब्दों की तलाश हो या पर्यायवाचियों की, सब गूगल की शरण में जा चुके हैं। स्पैलिंग की तो अब चिन्ता ही किसे है। एक स्लैंग भाषा समकक्ष चल रही है। डिक्शनरी के प्रकाशकों की भी मिट्टी खराब हो रही होगी ठीक वैसे ही जैसे अलमारियों में सजी भारी-भरकम डिक्शनरियों पर मिट्टी की परतें चढ़ रही हैं।

गहन मानवीय स्पर्श की महिमा सिन्धु ताई सपकाल

गनेशी लाल

एक समय के बाद भारतीय संस्कृति में अनेक विकृतियां आईं, जिनमें अंधविश्वास, रुढ़िवाद तथा तरह तरह के सामाजिक भेदभाव प्रमुख थे। भेदभावों में भी जातिगत भेदभाव, रंगगत भेदभाव, लिंगगत भेदभाव और आदि भेदभावों की समाज में झड़ी लग गयी थी। जिसमें मानवता गौण हो गई और इन सामाजिक विकृतियों ने समाज में मुख्य स्थान बना लिया, कहना न होगा कि इन सामाजिक विकृतियों ने समाज को आगे जाने से न सिर्फ रोका बल्कि बहुत समय तक जकड़े रखा। महिलाओं के प्रति भेदभाव समाज की प्रमुख विकृति थी भारतीय समाज में महिलाएं समाज की किसी वस्तु की तरह प्रयोग की जाती थीं तथा भोग्य साधन की तरह होगी जाती थीं। जिस देश में देश की पहचान ही 'मां (विशेषण) से होती है उसी देश में मां का दायित्व निभाने वाली महिला का कोई कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बचा था। चतुर्वर्णों में जो स्थिति शूद्रों की थी बहुत कुछ वही स्थिति समाज में महिलाओं की रही। न जाने कब से सती और सत्य के नाम पर महिलाओं को जिंदा जलाया जाता रहा तथा शिक्षा से वंचित रखकर इन मांओं को दासी और नौकरानी बनाकर रखा गया। इसी भारतीय समाज में अनेक ऐसी स्त्रियों के नाम हैं जिन्होंने इन विकृतियों का विरोध किया और आगे बढ़ीं तथा समाज को एक नवीन दिशा प्रदान की। इन्हीं वीरांगनाओं में एक नाम है सिन्धु ताई सपकाल!

सिन्धु ताई महाराष्ट्र के वर्धा जिले में 14 नवंबर 1948 को जन्मी थीं बचपन में इनको 'चिंदी नाम से बुलाया जाता था मराठी शब्द 'चिंदी का अर्थ होता है -फटा पुराना वस्त्र! इससे समझा जा सकता है कि उनके घर -परिवार तथा समाज में उनका क्या स्थान था। स्त्री होना केवल समाज के लिए अभिशाप नहीं है बल्कि जो मां जन्म देती है तथा जो पिता पोषण करता है उनके लिए भी बेटी एक अभिशाप ही है। विवाह करने के बाद भारतीय समाज बेटी को भूल जाता है वह ससुराल में जीवित रहे या मर विवाह के बाद घर वालों का कोई उत्तरदायित्व नहीं रह जाता। चिंदी की शादी हो गई, पति अनपढ़ मिला जबकि चिंदी दर्जा चार तक पढ़ी लिखी थी। चिंदी की पढ़ाई-लिखाई से पति के पुरुषत्व को ठेस लगती थी अत: वे जिंदगी सारी पठन-पाठन सामग्री आग के हवाले कर देते थे पर स्वभाव से चिंदी भी कम स्वाभिमानी नहीं थी कविता लिखकर इस डर से का कागज़ सहित पूरी कविता चबा खा जाती थीं कि उनके पति उसको आग में न जला दें। समय गुजरता गया रोते-सहते कटती रही और एक दिन ऐसा भी आया जब चिंदी को नवें माह की गर्भावस्था में उनके पति ने घर से लात मार कर निकाल दिया यह लात मारना 'रावण का विभीषण को लात मारने से कहीं ज्यादा आनाचारी और अत्याचारी था क्योंकि यह लात एक महिला को पूर्ण-गर्भावस्था के समय मारी गई थी जबकि वह प्रसव के नजदीक होती है। चिंदी तबेले के बीच रात भर पड़ी रही और वहीं उन्हें उन्होंने बच्ची को जन्म दिया, यही नहीं इतिहास के कुछ एक महिलाओं में यह भी थीं जिन्होंने अपनी गर्भनाल स्वयं काटी थी गर्भनाल इतनी आसानी से नहीं कटती पत्थर की सोलह चोंटे देनी पड़ीं तब जाकर गर्भनाल कटी ऐसे जीवन के दुर्गम-मार्ग से होकर निकली चिंदी आगे चलकर सिंधुताई सपकाल के नाम से जानी जाती है। और रेलवे में गाना गाकर भीख मांग-मांग कर अपना पेट भरती है तथा देश में घूम रहे अनाथ बच्चों का को भी खिलाती है धीरे -धीरे सिन्धु ताई उन अनाथ बच्चों के साथ रह-रहकर उनकी मां बन गई और हजारों बच्चों को फुटपाथ से उठाकर डॉक्टर, इंजीनियर और प्रोफेसर बना दिया तथा अन्य देश की बड़ी-बड़ी संस्थाओं में पहुंचा दिया प्रसार भारती के एक एपिसोड के अनुसार सिंधुताई आज लगभग दो हजार अनाथ बच्चों की मां है। देश में बढ़ती जनसंख्या के कुप्रभाव जिस तरह से देश के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ रहे हैं उनसे शायद ही कोई अनभिज्ञ होगा ओशो ने कहा था कि भारतीय समाज में जो दूधो नहाओ पूतो फलो का आशीर्वाद दिया जाता रहा है आज उस को बदलने की आवश्यकता है आज बढ़ती जनसंख्या के दौर में संतानोत्पत्ति का आशीर्वाद, आशीर्वाद नहीं बल्कि श्राप है इस बात को सिंधुताई सपकाल ने करके दिखा दिया जो सदी के सबसे बड़े दार्शनिक में जो बात कही उसको व्यवहार में उतारना आसान नहीं है तथापि इस एक अकेली महिला ने इस असंभव को संभव कर दिखाया सिंधुताई हमारे बीच मानवता के एक आदर्श के रूप में सामने आती हैं उन्होंने हम युवाओं के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया है बच्चा न होने के अभाव में बांझ या निपुत्री की उपाधि लेकर समाज की ठोकरे नहीं खानी बल्कि देश में घूम रहे लाखों अनाथ बच्चों को सनाथ करना है उनके मां-बाप बन जाना है जिससे वे बच्चे भी देश के विकास में पढ़-लिखकर अपना योगदान दें जो कि फुटपाथ पर भूखों मर रहे हैं। वैसे तो मां शब्द बहुत बड़ा है फिर भी सिंधुताई सपकाल ने अपने कारनामों से इस शब्द को और अधिक परिव्याप्ति दी है जिससे यह शब्द शक्ति के विद्युतकणों से युक्त हो चुका है यह ऐसा अर्थ पा चुका है कि परिवार, समाज तथा देश इसको अपनी सीमा में बांध नहीं सकते यह शब्द अपने आप में अखिल विश्व का पर्याय है। आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं उसमें विकास और उन्नति तो है पर मनुष्यता कहीं खोती जा रही है व्यक्तिवाद अपनी चरम सीमा को प्राप्त होकर मनुष्यता को छोड़ने लगा है समाज में किसी के सुख-दुख से हमें ज्यादा सरोकार नहीं रहा कोरोनाकाल की विभीषिका ने इस आग में घी डालने का काम किया है। देश का किसान धन के अभाव में, युवा रोजगार के अभाव में तथा सरकारें संवेदना के अभाव में स्वार्थ के गर्त में धंसती जा रही हैं ऐसे समय में सिंधु ताई सपकाल मां बनकर आईं और वस्तुत: मां की ममता से जिनका कोई नहीं था उन्हें स्नेह-सिक्त कर दिया उनकी मां बन गईं भारत सरकार ने सिंधु ताई को पद्मश्री से नवाज़ा यह गौरव की बात है; ऐसे विराट व्यक्तित्व का जाना दुखद ही नहीं अपितु अकल्पनीय तथा अत्यंत असहनीय है ऐसी मनुष्यता की साक्षात् देवी को मैं बारंबार नमन करता हूं एवं हृदय की अतल गहराइयों से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

सफलता के लिए हो उत्कट इच्छा

सीताराम गुप्ता

हम सब जीवन में सफलता का स्वाद चखना चाहते हैं लेकिन कितने व्यक्ति हैं जो अपने जीवन में अपेक्षित सफलता प्राप्त कर पाते हैं? बहुत कम। वास्तव में अपेक्षित सफलता न मिलने का कारण होता है सफलता के प्रति विश्वास की कमी अथवा सीमित विश्वास। दरअसल, हम अपनी सोच के सकारात्मक परिणाम पर विश्वास ही नहीं कर पाते हैं कि ऐसा संभव हो सकेगा। और यदि हमें कोई सोचने पर विवश कर भी दे तो हमारे विश्वास की एक सीमा अवश्य होती है और किंतु-परंतु जैसे शब्द हमारे मन में आ धमकते हैं और इस प्रकार अविश्वास ही नहीं सीमित विश्वास तथा इनके कारण निरंतर अभ्यास की कमी हमारी सफलता में सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।

घुन लगा हुआ भीतर से खोखला बीज हो अथवा आधा कटा हुआ बीज, ये अंकुरित होकर पौधे नहीं बन सकते। ऐसे बीज तो मिट्टी में पड़े-पड़े सड़कर ही समाप्त हो जाते हैं। यदि अच्छे बीज हों लेकिन उनके साथ किंतु-परंतु रूपी खर-पतवार उग आए तो भी ये पौधे को पूरी तरह से पनपने नहीं देते। कई बार पौधे तो होते हैं दो-चार लेकिन खर-पतवार इतना अधिक कि पौधों को जमीन से न तो पोषण ही मिल पाता है और न सूर्य की रोशनी ही। यही हमारे विचारों के साथ होता है। या तो हमारे विचार ही अच्छे नहीं होते और यदि विचार अच्छे हों तो किंतु-परंतु रूपी संशय उन्हें विनष्ट कर डालता है। महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन को यही समझाते हैं कि विवेकहीन और श्रद्धारहित संशयात्मा मनुष्य का पतन हो जाता है। ऐसे संशयात्मा मनुष्य के लिए न यह लोक है, न परलोक है और न सुख ही है। संशय क्या है? संशय है अधूरा ज्ञान अथवा अज्ञान। हम जिस विषय को बिलकुल नहीं समझते उस विषय में संशय पैदा नहीं होता और जिसको भली-भांति समझते हैं उसमें भी संशय पैदा नहीं होता। संशय पैदा होता है अधूरे ज्ञान से और यही अज्ञान है। अज्ञान ज्ञान का अभाव नहीं है। अधूरे ज्ञान को पूरा मान लेना ही अज्ञान है। किसी विषय की गलत जानकारी अज्ञान है। संशय का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। अत: संशय उत्पन्न होना हानिकारक नहीं है लेकिन संशय को बनाए रखना और उसे दूर करने की चेष्टा न करना हानिकारक है। संशयग्रस्त मनुष्य को न तो आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग में ही कोई लाभ होता है और न ही वह जीवन में भौतिक सफलता ही प्राप्त कर पाता है। 'जाकी रही भावना जैसी' इसी सिद्धांत के अनुरूप, अपने विश्वास के अनुरूप ही हम सफलता प्राप्त कर पाते हैं। यही बात बाइबिल में कही गयी है कि आपके विश्वास के अनुसार ही आप कार्य करते हैं।

विलियम जेम्स ने कहा है कि हमारी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां असीमित, अपूर्व तथा अकल्पनीय हैं, जिनका हम प्रयोग ही नहीं करते या सीमित प्रयोग कर सीमित फल पाते हैं। आज हम अस्वस्थ, अशांत, असमृद्ध, असंतुलित अथवा अप्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी चाहे न हों लेकिन अपने सीमित विश्वास अथवा अपने विश्वास की शक्ति का उपयोग न कर पाने के कारण कहीं न कहीं अल्पस्वस्थ, अल्पशांत, अल्पसमृद्ध, अल्पसंतुलित तथा अल्प प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी अवश्य हैं अन्यथा आज हम अपने सर्वांगीण विकास की सीढ़ी के जिस डंडे पर खड़े हैं उससे अगले डंडों पर क्यों नहीं? ये हमारा सीमित विश्वास या विश्वास की कमी ही तो है जिसके कारण हम सबसे पहले पहुंचने पर भी अगली पंक्ति में सर्वोत्तम स्थान पर बैठने की अपेक्षा पीछे की ओर किसी उपेक्षित-सी सीट पर जा बैठते हैं।

संभवत: आपको पता नहीं है कि विश्व की सारी समृद्धि, सारा ऐश्वर्य सिर्फ आपके लिए है। कहने का तात्पर्य यही है कि विश्व की सारी ताकतें आपके कदमों में सर झुकाने को बेताब हैं लेकिन आप हैं कि मन में ख्वाहिश ही पैदा नहीं करते। मन में ख्वाहिश पैदा कीजिए और अपने मन की शक्ति पर पूर्ण विश्वास कीजिए और फिर देखिए सफलता की हर सीढ़ी कैसे आपके लिए छोटी पड़ जाती है।

एक मुकम्मल प्यास एक उत्कट इच्छा तो मन में पैदा कीजिए उसकी पूर्ति का प्रबंध भी अवश्य हो जाएगा। विलियम जेम्स के अनुसार, इस शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार है कि मनुष्य अपने विचारों को बदल कर जीवन सुखमय एवं सफल बना सकता है। वास्तविकता तो यही है कि मनुष्य को सफल होने के लिए अधिक शारीरिक श्रम करने की आवश्यकता ही नहीं। सकारात्मक विचार जीवन में क्रांति लाने में पूर्णत: सक्षम होते हैं। सफलता के विचार ही उसको दुनिया में सबसे ऊपर ले जा सकते हैं। आवश्यकता है तो बस कुछ करने के विषय में सोचने और उसकी सफलता की कामना करने की। जीवन के किसी भी क्षेत्र में ऊंचाई पर पहुंचना उतना ही आसान है जितना किसी हिल स्टेशन पर पहुंचना। बड़े भाग्य की बात है कि हमारी मंजिल हमें पुकार रही है, कहीं बहुत ही नजदीक है लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि हम फिर भी उसकी तलाश नहीं कर रहे हैं। पहले तो कभी मंजिल हमारे इतने पास न थी लेकिन अब तो मंज़िल सामने है उसे छू लीजिए। अपने विचारों की शक्ति को पहचान कर उस पर विश्वास करके अपने जीवन को सफल बना लीजिए।

व्यर्थ है दाता बनने का अभिमान

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

आज हम सभी भौतिकता में इस कदर खो गए हैं कि एक पल के लिए भी अपने अंतर्मन में झांकने की फुर्सत हमें नहीं मिल पाती। दूसरे शब्दों में सच तो यह है कि अभिमान का चश्मा आज इतना सस्ता हो गया है कि हर कोई बड़ी सरलता से उसे अपनी आंखों पर चढ़ा लेता है और खुद को ही इस संसार का नियंता और सबसे बड़ा कर्त्ता मान बैठता है। जाने क्यों, आदमी इस संसार की उस सच्चाई को क्यों भूल बैठा है, जो कबीर ने उसे बताई थी और फिर भी चेताया था :-

'कबीरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस।

ना जाने कित मारिहै, क्या घर, क्या परदेस।'

अब करें भी क्या? स्वयं को ही 'कर्त्ता' समझने का यह भाव आदमी को ज्ञानी होते हुए भी अपमानित करवाता आया है। लेकिन हम उससे कोई सबक नहीं सीखते। कुछ दिन पूर्व मुझे 'उपनिषद' में आई महान ज्ञानी याज्ञवल्क्य की बहुत ही प्यारी और प्रेरक कथा पढ़ने को मिली, कथा कुछ इस प्रकार है-

महर्षि याज्ञवल्क्य प्रकांड महाज्ञानी और तर्कशास्त्र में पूर्णत: पारंगत ऋषि थे। एक बार राजा जनक ने सौ गायों के सींगों को सोने से मढ़वा कर, उनके ऊपर अथाह सोना-चांदी रखवा दिया और उन सारी गायों को धूप में खड़ा करवा दिया। राजा जनक ने घोषणा कराई कि जो भी विद्वान शास्त्रार्थ में विजयी होगा, वही इन सुवर्ण से लदी गायों को साथ ले जाएगा। कालांतर सुबह से दोपहर हो गई, लेकिन कोई भी विद्वान शास्त्रार्थ के लिए आया ही नहीं। वहीं दूसरी ओर सारी गायें भूखी-प्यासी धूप में खड़ी व्याकुल हो रही थीं। लेकिन राजा के निर्देशों के चलते किसी ने उन्हें नहीं हटाया ताकि वे कुछ राहत पा सकें।

तभी ऋषि याज्ञवल्क्य वहां आए और गायों की दशा देखकर विचलित हुए। ऋषि याज्ञवल्क्य अपने शिष्यों से बोले कि इन निरीह गायों को भूखा-प्यासा धूप में खड़ा किया हुआ है और ये प्यास से बेहाल हैं, तुम इन्हें खोल कर ले जाओ। कुछ पंडितों ने राजा जनक से शिकायती लहजे में कहा भी कि बिना विजयी हुए ऋषि याज्ञवल्क्य गायों को कैसे ले जा सकते हैं? किंतु राजा जनक भी ऋषि याज्ञवल्क्य कहीं नाराज न हो जायें कुछ नहीं कह पाए और विद्वान याज्ञवल्क्य शास्त्रार्थ में विजय से पूर्व ही भूख और प्यास से बेहाल गायों को खोलकर ले गए। बाद में, यही महर्षि याज्ञवल्क्य जनक के शास्त्रार्थ में विजयी हुए।

ऐसे महान ज्ञानी याज्ञवल्क्य अपने जीवन के अंतिम समय को देखकर, जब संन्यास लेकर वन में जाने लगे तो उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों को बुलाकर कहा कि मैं तो सब कुछ छोड़कर परमात्मा की साधना में लीन होने के लिए वन की ओर जा रहा हूं, इसलिए यह सारी धन-संपत्ति मैं तुम्हें सौंपता हूं। ऐसी स्थिति में मेरे लिए अब इस धन-संपदा का कोई मूल्य नहीं रह गया है।

महर्षि याज्ञवल्क्य के वन गमन और धन-संपत्ति सौंपने की बात सुनकर एक पत्नी तो बड़ी प्रसन्न हुई कि इतनी अपार धन-संपत्ति मिल रही है, लेकिन उनकी दूसरी पत्नी परम विदुषी थी। उसने ऋषि से पूछा- हे महाऋषि, आप ही कहते हैं कि यह धन-संपत्ति आपके लिए मूल्यवान नहीं है, तब यह कचरा आप हमें क्यों दे रहे हैं?' अपनी पत्नी का यह तार्किक प्रश्न सुनकर याज्ञवल्क्य गहरी सोच में पड़ गए और उन्होंने अपनी विदुषी पत्नी को कहा-आज तुमने तो मेरी आंखें खोल दी हैं। मैं तो स्वयं को तुम्हारा पालनकर्ता मान कर अभिमान में भरकर यह धन-संपत्ति छोड़ रहा था, जबकि तुमने इस धन-संपदा को कचरा बता कर मुझे ही निरुत्तर कर दिया है। सही मायनों में तुम तो मेरी गुरु हो।

इस बोधकथा को पढ़कर यही लगा कि निस्संदेह हम व्यर्थ ही कुछ सोने-चांदी के सिक्कों को पाकर स्वयं को संसार का पालनकर्त्ता मान बैठते हैं। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि जो हमारे प्राणों की डोर अपने हाथों में पकड़े हुए बैठा है, सही मायनों में असली कर्त्ता तो 'वही' है।

एक्सपायर हो चुके क्रेडिट कार्ड का इन बेहतरीन तरीकों से करें इस्तेमाल

जब क्रेडिट कार्ड एक्सपायर हो जाता है, तब यह किसी का काम का नहीं रहता और नए क्रेडिट कार्ड अप्लाई करने के बाद कई लोग उसे यूं ही इधर-उधर रख देते हैं। ऐसे में अगर आप चाहें तो इस एक्पायर्ड क्रेडिट कार्ड को कई बेहतरीन तरीकों से इस्तेमाल कर सकते हैं। चलिए आज हम आपको एक्सपायर क्रेडिट कार्ड को दोबारा इस्तेमाल करने के कुछ बेहतरीन आईडियाज के बारे में बताते हैं, जो यकीनन आपको भी काफी पसंद आएंगे।

अगर आपके पास एक्सपायर क्रेडिट कार्ड है तो आप इसका इस्तेमाल बुक मार्क की तरह कर सकते हैं। अगर आप किताबें पढ़ने के शौकीन हैं तो आप एक बार में पूरी किताब न पढ़ पाने पर पन्ने को मोड़ देते होंगे या फिर उसे मार्कर आदि से हाइलाइट कर देते होंगे, लेकिन अब आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है। आप जहां पर भी अपनी रीडिंग खत्म करें, वहां पर क्रेडिट कार्ड को रख दें।

आप चाहें तो क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल एक स्क्रैपर के तौर पर भी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर फर्श पर पेंट जैसा कुछ चिपक गया है या फिर आपको फ्रिज से बर्फ को खुरचना है या फिर प्लेट पर खाना चिपक गया है तो ऐसे में क्रेडिट कार्ड आपके बेहद काम आ सकता है। बस आपको इतना करना है कि आप उस जगह पर इसे अच्छी तरह उस स्थान पर स्क्रैप करें।

ईयरफोन से लेकर चार्जर का इस्तेमाल करना आसान होता है, लेकिन जब इन्हें स्टोर करने की बात आती है तो इनकी तारें आपस में उलझ जाती हैं और कभी-कभी तो इससे वह अंदर से कमजोर हो जाती हैं और जल्द ही खराब हो जाती हैं। ऐसे में आप तारों को व्यवस्थित करके रखने के लिए क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कर सकते हैं। बस हर बार इन तारों का इस्तेमाल करने के बाद आप उसे क्रेडिट कार्ड पर लपेटें।

अगर आपको कोई भी आर्ट एंड क्राफ्ट का कुछ काम कर रहे हैं और आपको उस दौरान एक सीधी रेखा खींचनी है, लेकिन आपके पास रूलर नहीं है तो ऐसे में आप क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल कर सकते हैं। चूंकि इसके कार्नर एकदम सीधे होते हैं तो ऐसे में उसे बतौर रूलर इस्तेमाल करना एक अच्छा आईडिया है। यकीनन इससे एकदम सीधी रेखा खींचने में काफी मदद मिलेगी।

घर में इस प्रकार रहेगा सकारात्मक माहौल

घर में खुशहाली लाने के लिए हमें सकारात्मक माहौल रखना होगा। साथ ही वास्तुदोषों को दूर करना होगा। हम जिस स्थान पर रहते हैं, उसे वास्तु कहते हैं। इसलिए जिस जगह रहते हैं, उस मकान में कौन-सा दोष है, जिसके कारण हम दुख-तकलीफउठाते हैं, इसे स्वयं नहीं जान सकते। हमें यह भी पता नहीं रहता कि उस घर में नकारात्मक ऊर्जा है या सकारात्मक।

वास्तु में प्रत्येक स्थान का जगह तय है और इसमें फेरबदल होने से वास्तु दोष होता है।

ईशान अर्थात ई-ईश्वर, शान-स्थान। इस स्थान पर भगवान का मंदिर होना चाहिए एवं इस कोण में जल भी होना चाहिए। यदि इस दिशा में रसोई घर हो या गैस की टंकी रखी हो तो वास्तुदोष होगा।

अत: इसे तुरंत हटाकर पूजा स्थान बनाना चाहिए या फिर इस स्थान पर जल रखना चाहिए। पूर्व दिशा में बाथरूम शुभ रहता है। खाना बनाने वाला स्थान सदैव पूर्व अग्निकोण में होना चाहिए। भोजन करते वक्त दक्षिण में मुंह करके नहीं बैठना चाहिए।

प्रमुख व्यक्तियों का शयन कक्ष नैऋत्य कोण में होना चाहिए। बच्चों को वायव्य कोण में रखना चाहिए। शयनकक्ष में सोते समय सिर उत्तर में, पैर दक्षिण में कभी न करें। अग्निकोण में सोने से पति-पत्नी में वैमनस्यता रहकर व्यर्थ धन व्यय होता है। ईशान में सोने से बीमारी होती है। पश्चिम दिशा की ओर पैर रखकर सोने से आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है। उत्तर की ओर पैर रखकर सोने से धन की वृद्धि होती है एवं उम्र बढ़ती है।

फेंगशुई के अनुसार घर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व व अग्नि कोण के द्वार का रंग सदैव हरा या ब्ल्यू रखना चाहिए। दक्षिण दिशा के प्रवेश द्वार का रंग हरा, लाल, बैंगनी, केसरिया होना चाहिए। नैऋत्य और ईशान कोण का प्रवेश द्वार हरे रंग का या पीला केसरी या बैंगनी होना चाहिए। पश्चिम और वायव्य दिशा का प्रवेश द्वार सफेद या सुनहरा होना चाहिए। उत्तर दिशा का प्रवेश द्वार आसमानी सुनहरा या काला होना चाहिए।

बेडरूम में टेबल गोल होना चाहिए। बीम के नीचे व कालम के सामने नहीं सोना चाहिए। बच्चों के बेडरूम में कांच नहीं लगाना चाहिए। मिट्टी और धातु की वस्तुएं अधिक होना चाहिए। ट्यूबलाइट की जगह लैम्प होना चाहिए।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *साध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

—प्रबंधक विज्ञापन

गले की अकड़न को दूर करने में मदद कर सकते हैं ये घरेलू नुस्खे

कई बार असामान्य गतिविधियों या कुछ बीमारियों के कारण कई तरह की शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन्हीं समस्याओं में से एक है गले का अकड़ना, जिसे अक्सर कई लोग सामान्य समझकर नजरअंदाज कर देते हैं और यही लापरवाही भविष्य में उन्हें भारी पड़ सकती है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे घरेलू नुस्खों के बारे में बताते हैं, जिन्हें अपनाकर आप गले की अकड़न से छुटकारा पा सकते हैं।

ठंडी सिकाई करें

ठंडी सिकाई की मदद से गले में होने वाली अकड़न से काफी राहत मिल सकती है। राहत के लिए कोल्ड पैड से प्रभावित हिस्से की सिकाई करें। अगर आपके पास कोल्ड पैड नहीं है तो एक तौलिये का थोड़ा सा हिस्सा ठंडे पानी में डुबो लें, फिर इसे निचोड़कर चार-पांच मिनट तक इसे प्रभावित जगह पर लगाकर रखें। ऐसा दिन में दो से तीन बार करने से आपको काफी आराम मिलेगा।

तेल मालिश से मिलेगा आराम

अगर आपको गले में अकड़न महसूस हो तो इससे छुटकारा दिलाने में तेल मालिश काफी मदद कर सकती है। इसके पहले किसी भी मालिश वाले तेल की कुछ बूंदें हथेली पर लें, फिर अपनी उंगलियों की मदद से प्रभावित हिस्से पर इसे लगाएं। इसके बाद हल्के हाथ से उस जगह को दबाएं और गोलाकर में मालिश करें। इस तरह करीब 10-15 मिनट तक रोजाना मालिश करें। ऐसा करने से गले की अकड़न कुछ ही दिनों में छूमंतर हो जाएगी।

सेब के सिरके का करें इस्तेमाल

सेब का सिरका एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों से समृद्ध माना जाता है, जिसकी वजह से यह गले की अकड़न से राहत दिलाने में सहायक है। राहत के लिए आप एक छोटी बाल्टी में हल्का गर्म पानी और सेब के सिरके की कुछ बूंदें अच्छे से मिलाएं, फिर इस मिश्रण में एक तौलिये को डूबोकर निचोड़ दें। इसके बाद उस तौलिये को गले पर अच्छे से लपेटकर 15-20 मिनट के लिए छोड़ दें। इससे आपको काफी आराम मिलेगा।

योग और स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज भी है प्रभावी

अगर गले में अकड़न की समस्या होने लगे तो घरेलू नुस्खे के तौर पर योग और स्ट्रेचिंग करना अच्छा विकल्प हो सकता है। जब भी आपको गले में अकड़न महसूस हो तो कम से कम 15 मिनट तक वीरासन, गोमुखासन और वृक्षासन आदि योगासनों का अभ्यास करें। वहीं, योगाभ्यास से पहले और बाद में स्ट्रेचिंग करना न भूलें क्योंकि इसके अभ्यास से मांसपेशियों में लचीलापन आता है, जिससे गले को आराम मिलता है।

दांतों के किटाणुओं से हैं परेशान तो आजमाएं लौंग का तेल

दांतो के किटाणुओं को खत्म करने, सांसों की बदबू मिटाने और जले-कटे घावों को भरने में लौंग का तेल कारगर साबित होता है। दरअसल लौंग आयुर्वेदिक औषधि है, जिसका इस्तेमाल अनेक बीमारियों के लिए किया जाता है।

लौंग का तेल, उसकी पत्तियां और उसकी सूखी हुई कलियां चिकित्सकीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इसमें एंटी माइक्रोबियल, एंटी फंगस, एंटी वायरल और एंटीसेप्टिक जैसे अनेक गुण होते हैं। इसकी वजह से यह कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं में हमें बगैर चिकित्क के पास गए ही निजाद दिला देता है। अक्सर लोग पूछते हैं कि आखिर क्या क्या कर सकता है लौंग का तेल तो देखिए सबसे पहले तो इम्यूनिटी बूस्ट करने के लिए लौंग का तेल कारगर साबित होता है। इसमें पाए जाने वाले एंटी ऑक्सीडेंट्स शरीर में बीमारी फैलाने वाले तमाम कारकों का सफाया करते हैं। कैंसर और दिल की बीमारियों के कारणों को भी खत्म करने में लोंग का तेल समर्थ है। इसके साथ ही साथ अपने एंटी सेप्टिक गुणों के कारण लौंग का तेल जले-कटे घावों को ठीक करने में लाभकारी सिद्ध होता है। यह फंगल इंफेक्शन या फिर किसी भी तरह के कीड़े के काटने से हुए घाव में होने वाले संक्रमण को रोकता है। वैसे घाव पर इसे सीधे नहीं लगाना चाहिए क्योंकि यह तकलीफदेह हो सकता है अतरू इसे लगाते समय बादाम या नारियल के तेल को मिलाकर ही लगाएं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि प्रत्येक टूथपेस्ट में लौंग का इस्तेमाल होता है। दरअसल दातों में छिपे किटाणुओं से लड़ने में यह काफी कारगर साबित होता है। दांत दर्द, मुंह का अल्सर और दांत के किटाणुओं को खत्म करने में लौंग के तेल का कोई सानी नहीं है।

शब्द सामर्थ्य -101

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मपुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे
1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

1		2	■	3		4	■	5
	■	6			■	7		
8	9		■	10	11		■	
■		■	■	■		■	■	■
12		12ए	■	13		14	■	15
	■	16			■	17		
18	19		■	20	21		■	
■		■	■	■		■	■	■
22			■	23			■	24

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 100 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

द लीजेंड ऑफ हनुमान के पांचवें सीजन का हुआ ऐलान

जीवन जे कांग और नवीन जॉन की वेब सीरीज द लीजेंड ऑफ हनुमान के अब तक 4 सीजन आ चुके हैं, जिन्हें दर्शकों का खूब प्यार मिला।अब दर्शक इसके पांचवें सीजन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जो जल्द खत्म हो जाएगा।आखिरकार निर्माताओं ने द लीडेंज ऑफ हनुमान के पांचवें सीजन का ऐलान कर दिया है।यह सीरीज जल्द ओटीटी प्लेटफॉर्म डिज्नी+ हॉटस्टार पर रिलीज होगी। इसकी रिलीज तारीख भी सामने आ गई है।

डिज्नी+ हॉटस्टार ने द लीडेंज ऑफ हनुमान का टीजर साझा करते हुए लिखा, पवनपुत्र लौट के आ रहे हैं, पंचमुखी अवतार में।इस सीरीज का प्रीमियर 25 अक्टूबर से डिज्नी+ हॉटस्टार पर होगा, जिसे आप हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और मराठी भाषाओं में देख सकते हैं।द लीजेंड ऑफ हनुमान का पहला और दूसरा सीजन 2021 में आया था, वहीं इसका तीसरा सीजन 12 जनवरी, 2024 और चौथा सीजन 5 जून, 2024 में आया था।

इस शो में संकेत म्हात्रे, सुरभि पांडे, दमनदीप सिंह बग्गन, विक्रांत चतुर्वेदी, रिचर्ड जोएल, शरद केलकर, रोहन जादव, शक्ति सिंह, साहिल वैद, वली, अहिरावण, तोशी सिन्हा, राजेश जॉली, आदित्य राज शर्मा, पुष्कर विजय, रोहन वर्मा, शैलेंद्र पांडे, सुरेंद्र भाटिया, विक्रम कोचर, अमित देवंडी, गणेश दिवेकर, गिरीश सहदेव और कई अन्य सहायक भूमिकाओं में हैं।

बता दें कि पहले सीजन का प्रीमियर 29 जनवरी, 2021 को 13 एपिसोड के साथ हुआ था। बाद में 27 जुलाई, 2021 को 13 एपिसोड के साथ इसका दूसरा सीजन सामने आया। वहीं 12 जनवरी 2024 इसके तीसरे सीजन के छह एपिसोड सामने आए। चौथे सीजन की घोषणा 23 अप्रैल 2024 को हनुमान जयंती के अवसर पर की गई थी। इस शो का प्रसारण इस साल 5 जून से 11 जुलाई तक किया गया। 'द लीजेंड ऑफ हनुमान' सीरीज, वर्तमान में डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध है।

अविका गौर ने अपनी आगामी फिल्म शनमुखा का पोस्टर किया शेयर

अविका गौर ने अपनी आगामी फिल्म शनमुखा का पोस्टर शेयर किया है, जिसे शन्मुगम सप्पानी ने निर्देशित किया है। अविका ने इंस्टाग्राम पर पोस्टर साझा करते हुए लिखा, यह अनोखा और सस्पेंसफुल पोस्टर उस रोमांचक यात्रा की एक झलक है जो आपका इंतजार कर रही है। एक महाकाव्य साहसिक कार्य के लिए तैयार हो जाएं, जिसमें रहस्य, थ्रिलर और समय में पीछे की यात्रा शामिल है। शनमुखा इस अक्तूबर सिनेमाघरों में दस्तक देगी। पोस्टर में फिल्म की रोमांचक और रहस्यमय थीम को दिखाया गया है, जिससे दर्शकों के बीच उत्सुकता बढ़ गई है।

शनमुखा के निर्देशक शनमुगम सपनी हैं और फिल्म का निर्माण तुलसीराम सपनी, शनमुगम सपनी और रमेश यादव द्वारा सैपब्रो प्रोडक्शंस के बैनर तले किया जा रहा है, जिसने पहले 2022 की फिल्म सासनसभा का निर्माण किया था। हाल ही में, निर्माताओं ने यह भी घोषणा की कि आगामी दिव्य थ्रिलर की शूटिंग पूरी हो गई है। प्रख्यात संगीत निर्देशक रवि बसरूर ने शनमुखा के लिए संगीत तैयार किया है। छायांकन आरआर विष्णु ने किया है। इस बीच, सतीश अकेत पटकथा लेखक होने के साथ-साथ फिल्म के संपादक भी हैं। एस बलवीर ने कहानी और संवाद लिखे हैं। आदि साईकुमार को आखिरी बार विश्वक सेन अभिनीत फिल्म दास की धमकी में देखा गया था। दूसरी ओर, अविका गोर की आखिरी ऑन-स्क्रीन उपस्थिति 2023 की फिल्म उमापति में थी।

अपने किरदार में डूब जाने का मौका देता है ओटीटी प्लेटफॉर्म:सोनाक्षी सिन्हा

हाल ही में स्ट्रीमिंग फिल्म ककुड़ा में नजर आई बॉलीवुड अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने ओटीटी प्लेटफॉर्म को बहुत अहम बताया। कहा कि यह कलाकारों को अपने किरदारों की गहराई को समझने और उन्हें निभाने का मौका देता है।

सोनाक्षी ने अब तक दो ओटीटी शो दहाड़' और हाल ही में आई 'हीरामंडी- द डायमंड बाजार' में दिखीं। इसमें सोनाक्षी के काम को दर्शकों ने बेहद पसंद किया।

एक अवॉर्ड शो में 'हीरामंडी' अदाकारा सोनाक्षी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अभिनेत्री ने कहा, मैंने लगातार दो साल यह पुरस्कार जीता है। यह पुरस्कार मुझे दहाड़ और 'हीरामंडी- द डायमंड बाजार' के लिए दिया गया। यह इस बात का प्रमाण है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म कलाकारों को खुलकर काम करने का मौका दे रहा है। यह कलाकारों को शक्तिशाली भूमिका निभाने का मौका दे रहा है।

सोनाक्षी ने ओटीटी और बड़े पर्दे पर काम करने के अनुभव पर बात करते हुए कहा, ओटीटी इस समय वाकई एक गेम-चेंजर है। ओटीटी पर पेश की जाने वाली भूमिकाएं अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण होती है। बड़े पर्दे पर हमेशा यह संभव नहीं होता। उन्होंने कहा, बड़ी स्क्रीन का उद्देश्य हमेशा ही ज्यादा से ज्यादा लोगों का मनोरंजन करना होता है, जबकि मुझे लगता है कि ओटीटी किरदारों को गहराई से जानने के लिए ज्यादा मौका देता है। मुझे दोनों ही जगह दर्शकों ने बहुत प्यार दिया है, जिसके लिए मैं आभारी हूं। इस डिजिटल क्रांति का हिस्सा बनना रोमांचक है, जहां कंटेंट ही सबसे ज्यादा मायने रखता है।

अभिनेत्री ने हाल ही में अपने किरदारों को निभाने पर बात करते हुए कहा था कि मैं सेट पर पहुंचती हूं, कैमरे का सामना करती हूं, और तब किरदार मेरे लिए जीवंत हो उठता है।

23 जून को सोनाक्षी ने जहीर के साथ परिवार और करीबी दोस्त की मौजूदगी में शादी की थी।

सोनाक्षी को पिछली बार रितेश देशमुख और साकिब सलीम के साथ ककुड़ा में देखा गया था। अब वह कुश सिन्हा निर्देशित निकिता रॉय एंड द बुक ऑफ डार्कनेस नामक फिल्म में नजर आएंगी।

वह आगामी फिल्म में अर्जुन रामपाल, परेश रावल और सुहैल नय्यर जैसे कलाकारों के साथ अभिनय करती नजर आएंगी।

कंगना रनौत तनु वेड्स मनु 3 में निभाएंगी 3 अलग-अलग किरदार

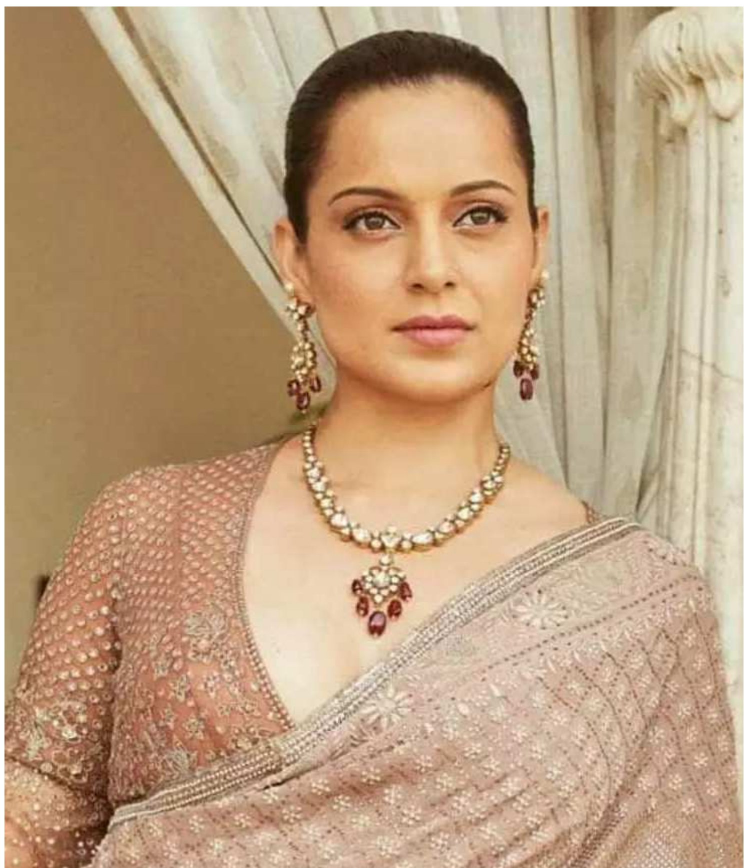

कंगना रनौत जल्द ही कई फिल्मों में नजर आएंगी। तनु वेड्स मनु रिटर्न्स भी उनकी आने वाली बहुप्रतीक्षित फिल्मों में शुमार है।इसके सीक्वल को लेकर लंबे समय से खबरें आ रही हैं। यहां तक कि खुद निर्देशक आनंद एल राय सीक्वल से जुड़ीं कई जानकारियां साझा कर चुके हैं, लेकिन अब जो खबर आ रही है, उससे बेशक इसे लेकर दर्शकों का उत्साह और बढ़ जाएगा।दरअसल, तनु वेड्स मनु 3 में कंगना 3 अलग-अलग भूमिकाओं में नजर आएंगी।

रिपोर्ट के मुताबिक, तीसरे भाग की कहानी वहीं से शुरू होगी, जहां दूसरा भाग खत्म हुआ था। एक बार फिर कंगना संग आर माधवन की जोड़ी देखने को मिलेगी।फिल्म में खूब रोमांस और ड्रामा होगा।

सबसे दिलचस्प बात यह है कि कंगना इस फिल्म में पहली बार ट्रिपल रोल करने जा रही हैं।उनके एक्टिंग करियर में यह पहला मौका होगा, जब वह फिल्म में 3 अलग-अलग किरदार निभाएंगी। इसे लेकर कंगना बेहद उत्साहित और रोमांचित हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म की शूटिंग अगले साल जुलाई या अगस्त में शुरू होगी। इससे पहले राय अभिनेता धनुष और कृति सैनन के साथ फिल्म तेरे इश्क में की शूटिंग पूरी करेंगे, वहीं इसी बीच कंगना की फिल्म इमरजेंसी पर्दे पर आएगी।बताया जा रहा है कि तनु वेड्स मनु 3 साल 2026 में पर्दे पर आएगी।तनु वेड्स मनु रिटर्न्स में कंगना ने डबल रोल किया था और दर्शकों से जमकर वाहवाही लूटी थी।

रोमांटिक कॉमेडी फिल्म तनु वेड्स मनु में कंगना, माधवन, जिमी शेरगिल, दीपक डोबरियाल, एजाज खान और स्वरा भास्कर भी थीं। यह 2011 में रिलीज हुई थी। दूसरा भाग तनु वेड्स मनु रिटर्न्स 2015 में दर्शकों के बीच आया, जिससे कुछ नए कलाकार भी जुड़े थे।

स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम का आधार

चिंतन वैष्णव, पीवी मधुसूदन राव

दुनिया के अधिकांश हिस्सों की तरह भारत में भी मुख्यधारा के नवाचार इकोसिस्टम में पूरी तरह से भाग लेने के लिए एक नवोन्मेषी को अंग्रेजी में दक्षता की आवश्यकता होती है। एक स्थानीय भाषा का नवोन्मेषी, जो अंग्रेजी नहीं जानता है, संभवत: एक अंग्रेजी बोलने वाले की तुलना में उतनी आसानी से निवेश नहीं जुटा पायेगा, चाहे उसका नवाचार आधारित समाधान कितना भी रचनात्मक हो। ऐसा क्यों हो? क्या रचनात्मक अभिव्यक्ति कामकाज की भाषा पर निर्भर होनी चाहिए? बिल्कुल नहीं ! हमने इस सम्बन्ध में कला क्षेत्र में बहुत सारे उदाहरण देखे हैं, जहां कुछ सबसे रचनात्मक कलाकार अंग्रेजी नहीं जानते हैं।

इसलिए यह स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम (वर्नाक्युलर इनोवेशन प्रोग्राम-वीआईपी) तैयार करने का समय है, जो व्यवस्था के तहत रचनात्मक अभिव्यक्ति और भाषा को अलग-अलग करता है। अटल नवाचार मिशन (एआईएम), भारत सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका संचालन नीति आयोग करता है। मिशन ऐसे ही एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का शुभारंभ करने वाला है।

2०11 की जनगणना के अनुसार, केवल 1०.4 प्रतिशत भारतीय अंग्रेजी बोलते हैं और इनमें से अधिकांश के लिए यह दूसरी, तीसरी या चौथी भाषा है। आश्चर्य नहीं कि केवल ०.०2 प्रतिशत भारतीय ही अपनी पहली भाषा के रूप में अंग्रेजी बोलते हैं। एक दशक बाद भी इस संख्या में बहुत बदलाव होने की संभावना नहीं है। फिर हमें स्थानीय भाषा के नवोन्मेषकों के लिए समान अवसर क्यों नहीं उपलब्ध कराना चाहिए, जो हमारी 9० प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यह समूह भी, चाहे वे कोई भी भारतीय भाषा बोलते हों, कम-से-कम बाकी लोगों के समान ही रचनात्मक प्रतिभा के धनी हैं।

स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम (वर्नाक्युलर इनोवेशन प्रोग्राम-वीआईपी) बनाने का क्या अभिप्राय है? एक स्तर पर, इसका मतलब एक नवाचार इकोसिस्टम तैयार करना है, जहां एक स्थानीय नवोन्मेषक (ए) डिजाइन अवधारणा और उद्यमिता के आधुनिक विषयों को सीख सकता है, (बी) वैश्विक बाजारों तक पहुंच बना सकता है और (सी) निवेश आकर्षित कर सकता है। यह नवाचार और उद्यमिता से जुड़े जोखिमों को पूरी तरह कम करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह सिर्फ भाषा की बाधा को दूर करने से सम्बंधित है। भारत के सन्दर्भ में इसका मतलब 22 अनुसूचित भाषाओं के लिए अलग-अलग इकोसिस्टम तैयार करना है।

स्थानीय नवोन्मेषकों के लिए डिजाइन अवधारणा और उद्यमिता को सुलभ बनाने का पहला कदम इन आधुनिक विषयों को स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराने पर आधारित है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है- स्थानीय संस्कृतियों से इन्हें जोड़ना। एक भाषा से दूसरी भाषा में विषयों का अनुवाद युगों से होता आ रहा है। किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में हर गुजरते साल के साथ भगवद गीता का अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सरल अनुवाद का विचार नया नहीं है।

अब तक जो नहीं हो पाया है, वह है- इन विषयों को स्थानीय संस्कृतियों के अनुकूल बनाना। इसका सीधा अर्थ यह है कि इस तरह के अनुकूलन के लिए एक योजनाबद्ध तरीका मौजूद नहीं है, जो आवश्यक है। आखिरकार, एक पंजाबी व्यवसायी, एक तमिल व्यवसायी के समान नहीं हैं, भले ही वे दोनों समान व्यावसायिक सिद्धांतों का पालन कर रहे हों। इसी तरह, एक बंगाली उपभोक्ता, गुजराती उपभोक्ता के समान नहीं है। उनकी संस्कृतियों में सूक्ष्म अंतर हैं, जिनके बारे में हम सभी जानते हैं, लेकिन हमें इन अंतरों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है। तो, इसे कैसे किया जाए? आइए हम इस पर एक प्रणाली के रूप में विचार करें।

किसी भी विषय को सीखने के दो प्राथमिक आयाम होते हैं: विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र। उच्चतम स्तर पर, अध्ययन सामग्री के लिए सीखने के सिद्धांत और इसके अनुप्रयोग की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर इस सिद्धांत को सीखता है कि मन और शरीर कैसे कार्य करते हैं और इसे अपनी चिकित्सा पद्धति में लागू करता है। सिद्धांत आगे जाकर अवधारणाओं और उनके अंतर्संबंधों में विभाजित होता है।

शिक्षाशास्त्र, अध्ययन सामग्री को सिखाने और सीखने का एक तरीका है। किसी विषय के लिए मोटे तौर पर अध्ययन सामग्री समान होती है और इंटरनेट क्रांति के साथ आज दुनिया भर में कहीं से भी इस सामग्री तक पहुंचा जा सकता है, लेकिन यह अध्यापन-कला ही है, जो एक प्रभावी शिक्षक को दूसरे शिक्षकों से अलग करती है। उच्चतम स्तर पर, शिक्षाशास्त्र के तीन भाग हैं: शिक्षण उद्देश्यों का निर्माण, अध्ययन सामग्री को पढ़ाने और ज्ञान-प्राप्ति के प्रभावी तरीकों का उपयोग करना और यह आकलन करना कि क्या इच्छुक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो रहे हैं और यदि नहीं, तो अध्यापन-कला को बेहतर रूप में अपनाना। आज संकट यह है कि अध्ययन सामग्री तो आसानी से साझा हो जाती है, लेकिन अध्यापन-कला का तेजी से प्रसार नहीं हो पाता है।

सटीक उदाहरणों के चयन से ही भाषा आयाम और संस्कृति आयाम का ताल-मेल स्पष्ट होता है। संस्कृति का विचार बहुत व्यापक है। इसलिए हमें उस हिस्से पर ही विचार करना चाहिए, जिसकी हमें यहां आवश्यकता है। संस्कृति के निम्नलिखित दो आयामों पर विचार करें: उद्यमिता संस्कृति और उपभोक्ता संस्कृति। क्षेत्र के आधार पर इनमें अंतर होता है। उद्यमिता संस्कृति, उच्चतम स्तर पर, क्षेत्र के लोगों की मान्यताओं, विश्वासों, जोखिम लेने की ताकत, क्षमता और महत्वाकांक्षाओं में दिखाई पड़ती है। इसी तरह, उपभोक्ता संस्कृति उस क्षेत्र के लोगों की जरूरतों, इच्छाओं, रीति-रिवाजों और सपनों में खुद को प्रकट करती है। यदि हम इन पहलुओं को समृद्ध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कर सकते हैं, तो हम किसी विषय को संस्कृति के अनुकूल बनाने में सफल होंगे।

भारत में सत्तर हजार से अधिक पंजीकृत स्टार्टअप के साथ, उद्यमिता संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कई समकालीन उदाहरण मौजूद हैं। हालांकि स्थानीय भाषा में कामकाज करने वाले नवोन्मेषी इनमें शामिल नहीं हैं। इसलिए हमें क्षेत्रीय अनुभव और आंचलिक साहित्य पर भरोसा करना चाहिए। उदाहरण के लिए, मुंशी प्रेमचंद ने जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा लोगों में अंतर्मन में गहरी बैठी आशाओं और आकांक्षाओं को चित्रित किया है, जिन्हें आज इस क्षेत्र की उद्यमिता और उपभोक्ता संस्कृति के अंतर्निहित तत्वों के रूप में समझा जा सकता है। अन्य भाषाओं में भी, इस तरह की लोकप्रिय रचानाओं में ज्ञान-प्राप्ति की दृष्टि से विभिन्न उदाहरण मौजूद हैं। हमें चयनित उदाहरणों के माध्यम से संस्कृति की इस गहराई को अपने नवाचार इकोसिस्टम से जोड़ना चाहिए।इस तरह के कार्यक्रम के लिए जरूरी क्षमता-निर्माण को ध्यान में रखते हुए, अटल नवाचार मिशन ने भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं में से प्रत्येक में, एक भाषा टास्क फोर्स की पहचान करने और उसे प्रशिक्षण देने के लिए आईआईटी, दिल्ली के डिजाइन विभाग के साथ भागीदारी की है। प्रत्येक टास्क फोर्स में स्थानीय भाषा के शिक्षक, डिजाइन अवधारणा विशेषज्ञ, तकनीकी लेखक और क्षेत्रीय अटल इनक्यूबेशन सेंटर का नेतृत्व शामिल हैं। इसके अलावा, उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तियों ने डिजाइन अवधारणा विशेषज्ञता साझा करने की पेशकश की है और सीएसआर प्रायोजक उदारतापूर्वक इस मिशन में शामिल होने के लिए सहमत हुए हैं।

सू- दोकू क्र. 101

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.100 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

बच्चों को सुंदर लेखन के लिए प्रेरित करें

लिखना भी एक कला है, लेकिन बच्चों को लिखना सिखाना तो यह और भी बड़ी कला है। बच्चों को लिखना सिखाने के लिए माता-पिता, अध्यापक तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों का सहयोग बहुत ही आवश्यक है। बहुत से माता-पिता को यह समस्या होती है कि बच्चों को लिखना कैसे सिखाया जाए? जिस प्रकार बच्चों को पढ़ाने के लिए लगातार अभ्यास कराना पड़ता है, उसी प्रकार लिखने का भी निरन्तर प्रयास कराना आवश्यक है। पढ़ने की तुलना में लिखना ज्यादा कठिन है। ऐसा देखा गया है कि जो जल्दी पढ़ना सीख जाते हैं वे लिखना देर से सीखते हैं। कुछ बच्चों को पढ़ना-लिखना साथ-साथ सिखाया जाता है। बच्चों को लिखना सिखाने के लिए माता-पिता, अध्यापक तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों का सहयोग बहुत ही आवश्यक है।

यदि बच्चे ने मेहनत करके लिखा है तो बड़ों को चाहिए कि वह उसे देखें तथा उन्हें पढ़ कर सुनाने के लिए कहें। समान्यतरू बच्चे वही लिखते हैं, जो सरल पाते हैं। बच्चे लिखने-पढ़ने में जल्दबाजी नहीं करते। कुछ बच्चे लिखना पढ़ना एक साथ सीख जाते हैं। प्रारम्भ में बच्चों को लिखने की शिक्षा माता-पिता तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों द्वारा घर पर ही दी जाती है। बाद में जब बच्चा स्कूल जाने लगता है तो यह जिम्मेदारी शिक्षकों पर आ जाती है, लेकिन स्कूल जाना प्रारम्भ करने के बाद भी माता-पिता की जिम्मेदारी बनी ही रहती है कि बच्चा स्पष्ट व सुंदर लिखे।

शिक्षकों का कहना है कि बच्चों को सर्वप्रथम छपे हुए अलग-अलग वर्णमाला पढ़ना सिखाना चाहिए, जिससे अक्षरों को पढ़ने व पहचानने की क्षमता जागृत हो। आमतौर पर वे बेहद एकाग्र होकर कसकर पैंसिल पकड़ कर लिखते हैं, जिससे उनकी आंखों पर जोर पड़ने की सम्भावना होती है। परिणामस्वरूप शीघ्र ही उसे चश्मा पहनना पड़ता है। माता-पिता को बच्चों की इस आदत पर नियंत्रण प्रारम्भ से ही रखना चाहिए।

आज की पीढ़ी में देखा गया है कि बच्चे काफी कम उम्र में लिखने-पढ़ने के प्रति रुचि दिखाने लगते हैं। विशेषकर दूरदर्शन, रेडियो आदि के प्रभाव से जल्द समझदार हो जाते हैं। उनमें बड़ों को देख कर लिखने की इच्छा जागती है। वे अपना, अपने मित्रों तथा माता-पिता का नाम लिखने का प्रयास करते हैं। माता-पिता या बड़ों को चाहिए कि वे ऐसे मौके का पूरा फायदा उठाएं, बच्चों में सही व सुन्दर लिखने को प्रोत्साहित करें। सीखने की रुचि बच्चों में स्वयं ही होती है। अतरू वह बड़ों के कहने को बहुत ही गम्भीरता से लेते हैं, जिससे उनके लिखने की योग्यता विकसित होती है।

बच्चे को जो लिखवाया जा रहा है, उसे जोर-जोर से बोलना चाहिए ताकि वह शब्द बच्चा अच्छी तरह से सुने। बच्चे जैसा सुनेंगे वैसा लिखेंगे। अगर बच्चा अशुद्ध और अस्पष्ट लिख रहा है तो उसे डांटने फटकारने के बजाय प्यार से बताना चाहिए। यदि उसे डांटा-फटकारा गया तो उसमें हीन भावना आ जाएगी और वह यही समझेगा कि मैं सुन्दर और शुद्ध लिख ही नहीं सकता। बच्चे को ऐसा लगना चाहिए कि मैं जो कुछ लिख रहा हूं, उस पर माता-पिता खुश हो रहे हैं। यह बहुत आवश्यक है, इससे बच्चे का उत्साह बढ़ता है। बच्चे किसी एक काम से बहुत जल्दी ऊब जाते हैं, इसलिए लिखने का काम भी उनसे जबरदस्ती नहीं करवाना चाहिए। बच्चे से ऐसी चीजें लिखवाएं जिससे उसमें रुचि पैदा हो।

महिला कर्मचारियों ने लगाई ओपीएस के नाम की मेहंदी

पौड़ी (सं)। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर रविवार को करवाचौथ पर महिला कर्मचारियों ने ओपीएस के नाम की मेहंदी लगाई। राष्ट्रीय पुरानी पेंशन बहाली संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारियों ने बताया कि केवल महिला कर्मचारियों ने ही नहीं बल्कि गृहणियों ने भी भावी पीढ़ी की सुरक्षा और समृद्धि के लिए यूपीएस के नाम की मेहंदी लगाकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया है। मोर्चा के प्रांतीय अध्यक्ष जयदीप रावत ने बताया कि मोर्चा के आंदोलन एवं विभिन्न कार्यक्रमों के चलते केंद्र सरकार को आम चुनाव में भारी नुकसान उठाना पड़ा है, साथ ही उत्तराखंड में हुए उपचुनाव में भी कर्मचारियों का आक्रोश झेलना पड़ा है। कहा कि यदि प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार कर्मचारियों की जायज मांग को शीघ्र ही लागू नहीं करती तो मोर्चा अन्य आंदोलन के माध्यम से अपनी बात को सरकार के सम्मुख रखेगा और आगामी चुनावों में भी उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। कहा कि यह मोर्चा का ही दबाव था कि केंद्र सरकार को एनपीएस की जगह यूपीएस लाना पड़ा। लेकिन मोर्चा इसे बिल्कुल स्वीकार नहीं करता है। प्रदेश महासचिव सीताराम पोखरियाल ने कहा कि 4 नवंबर को प्रदेश का हर कार्मिक इस जायज मांग के लिए देहरादून की सड़कों पर उतरेगा और परेड ग्राउंड से सचिवालय तक रैली के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद करते हुए सचिवालय घेराव करेगा।

गढ़वाली-कुमाउनी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करें: धीरेन्द्र प्रताप

चमोली(सं)। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष धीरेन्द्र प्रताप ने कहा कि अब समय आ गया है कि केंद्र सरकार गढ़वाली-कुमाउनी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करे। रविवार को जारी एक बयान में धीरेन्द्र ने कहा कि गढ़वाली और कुमाउनी भाषा लगभग एक हजार साल पुरानी भाषाएं हैं। इनमे हर विधा में साहित्य उपलब्ध है। साहित्य अकादमी जैसी देश की सर्वोच्च साहित्यिक संस्था भी गढ़वाली और कुमाउनी भाषाओं के साहित्यकारों को सम्मानित कर चुकी है। इन भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में हो रहा है और अन्य भारतीय भाषाओं का अनुवाद गढ़वाली और कुमाउनी भाषाओं में हो रहा है।

5 लाख की चरस व स्मैक के साथ दो गिरफ्तार

नई टिहरी(सं)। मुनिकीरेती पुलिस और सीआईयू की संयुक्त टीम ने स्मैक के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार लोगों में 12.02 ग्राम स्मैक के साथ 52 वर्षीय गोपाल जायसवाल उर्फ गोपाली पुत्र स्व. जुगल किशोर निवासी चंदेश्वर नगर चंद्रभागा थाना ऋषिकेश और 19 वर्षीय युवराज पुत्र नत्थु राम निवासी ग्राम भितरी थाना मोरी जिला उत्तरकाशी शामिल है। चरस और स्मैक की कीमत पांच लाख बताई जा रही है। आरोपी गोपाल के पास से स्मैक बेचने में इस्तेमाल किये जाने वाला इलेक्ट्रानिक तराजू भी बरामद किया गया है। पुलिस ने बताया कि पुलिस और सीआयू की टीम ने शनिवार रात को 250 ग्राम चरस के साथ आरोपी गोपाल को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की विभिन्न धाराओं में मुकदमा स्थानीय थाने में दर्ज कर लिया गया है। जबकि कैंपटी पुलिस ने आरोपी युवराज को रविवार दोपहर को यमुना पुल के निकट से गिरफ्तार कर उसके खिलाफ भी सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया है।

खाई से गिरकर युवक की मौत

रुद्रप्रयाग(सं)। मुख्यालय स्थित बेलनी में एक युवक की खाई से गिरकर मौत हो गई है। इस घटना से नगर में शोक की लहर दौड पड़ी। सूचना पर कोतवाली पुलिस, एसडीआरएफ, डीडीआरएफ और स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे जहां से शव को निकाला गया। जानकारी के अनुसार बेलनी पुल से लगी पहाड़ी पर बीती शाम ग्राम सतेरा निवासी 45 वर्षीय प्रकाश नेगी पुत्र रणजीत सिंह जनपद रुद्रप्रयाग (हाल निवासी बेलनी रुद्रप्रयाग) अपनी दुकान के पास ही खड़ा था कि इसी बीच वह घर आने की तैयारी कर रहा था कि पैर फिसलने के कारण अलकनंदा से लगी पहाड़ी में गिर गया। रात को घटना की किसी को जानकारी नहीं मिल पाई। परिजनों द्वारा खोजबीन की गई। जब देर रात तक भी वह घर नहीं पहुंचा तो परिजनों के साथ ही स्थानीय लोगों ने संबंधित युवक की दुकान और आसपास खोजबीन की। इस बीच पहाड़ी की तरफ युवक को गिरा हुआ देखा गया। सूचना पर रविवार सुबह कोतवाली पुलिस के साथ ही एसडीआरएफ, डीडीआरएफ और स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे। किसी तरह पहाड़ी से युवक के शव को निकाला गया। उक्त व्यक्ति की बेलनी में दुकान थी। पुलिस ने शव का पंचानामा भरते हुए पोस्टमार्टम के लिए जिला चिकित्सालय भेजा। जहां पीएम के बाद मृतक का अंतिम संस्कार किया गया। रेस्क्यू के दौरान एसडीआरएफ टीम के उप निरीक्षक हरीश बंगारी, कोतवाली निरीक्षक राजेंद्र सिंह रौतेला आदि मौजूद थे। इधर, घटना पर स्थानीय लोगों ने दुख व्यक्त किया है।

कैबिनेट मंत्री जोशी ने 430.20 लाख की पेयजल योजना के निर्माण कार्यों का शिलान्यास किया

संवाददाता

देहरादून। रविवार को कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने देहरादून के दून विहार वार्ड में राज्य सैक्टर कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वीकृत दून विहार वितरण प्रणाली पेयजल योजना के निर्माण कार्य का विधिवत उद्घाटन किया। ये योजना घ430.20 लाख की लागत से बनेगी, योजना के अंतर्गत दून विहार कॉलोनी, भागीरथीपुरम, कृष्णा विहार एवं अन्य समीपस्थ बस्तियां सम्मिलित हैं। इस योजना के माध्यम से क्षेत्र के 4000 से अधिक लोग लाभान्वित होंगे। इस दौरान कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने दून विहार में निर्माणाधीन सामुदायिक भवन का निरीक्षण कर निर्माण से संबंधित आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार जनता की सरकार जनता के द्वार नारे को आत्मसात करते हुए, जन भावनाओं के अनुरूप कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि धामी सरकार का संकल्प है जिन योजनाओं का शिलान्यास करेंगे उसका लोकार्पण भी करेंगे। इस दिशा में हमारी सरकार लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि पुष्कर सिंह धामी सरकार संवदेनशीलता से कार्य कर रही है। उन्होंने सख्त नकल विरोध ी कानून, दंगा विरोधी कानून आदि का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यूसीसी लागू करने वाला देश का पहला राज्य उत्तराखंड बन गया है।

विदित हो कि इससे पूर्व वार्ड में बापूनगर में एसटीपी प्लांट निर्माण तथा पेयजल के लिए ओवर हैड टैंक का निर्माण हो चुका है। वेंडर जोन तथा सामुदायिक भवन का निर्माण गतिमान है।

जलनिगम के अधिशासी अभियंता दीपक नौटियाल ने बताया कि वर्तमान में प्रस्तावित क्षेत्रों में पुरानी बिछी पेयजल वितरण प्रणाली जो कि अधिकांश ए०सी०/पी०वी०सी० पाईप की है व जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है एवं साथ ही अधिकल्पित अवधि भी पूर्ण कर चुकी है, जिससे मानकों के अनुसार पेयजल उपलब्ध न होने के कारण उक्त पेयजल योजना में कुल 9.00 कि०मी० वितरण प्रणाली (मीटरिंग प्रणाली सहित) को परिवर्तित किये जाने हेतु योजना स्वीकृत है। इन क्षेत्रों को लाभान्वित करने हेतु दून विहार वितरण प्रणाली की पेयजल योजना में प्रस्तावित वितरण प्रणाली में दून विहार क्षेत्र में पूर्व से अवस्थित जलाशयों क्रमशः दून विहार स्थित 200 कि०ली० क्षमता, अंसल ग्रीन वैली स्थित 500 कि०ली० क्षमता के उच्च जलाशय एवं विवेकानन्द परिसर, राजपुर रोड़ स्थित 225 कि०ली० अवर जलाशय से पेयजल आपूर्ति की जानी है।

इस अवसर पर कपकोट विधायक सुरेश गाड़िया, मंडल अध्यक्ष प्रदीप रावत, निर्वतमान पार्षद संजय नौटियाल, निरंजन डोभाल, पूनम नौटियाल, आशीष थापा, भावना बिष्ट, रेखा राजपूत, मंदिर समिति अध्यक्ष जेपी डिमरी, देवेंद्र रावत, वीके शर्मा, योगेंद्र चौधरी, पेयजल निगम के अधिशासी अभियंता दीपक नौटियाल सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

वर्चुअल अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। स्पीकिंगक्यूब ऑनलाइन मेंटल हेल्थ कंसल्टिंग फाउंडेशन द्वारा उत्तरांचल विश्वविद्यालय, देहरादून के सहयोग से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से भावनात्मक कल्याण पर 5वां वर्चुअल अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का आयोजन किया। मेजर अनुपा कैरी, निदेशक पेरिनैटल मेंटल हेल्थ और सलाहकार मनोवैज्ञानिक, स्पीकिंगक्यूब ने सत्र की शुरुआत की।

स्पीकिंगक्यूब की संस्थापक और निदेशक प्रो. डॉ. दीपिका चमोली शाही ने देवी शक्ति की प्रार्थना करके सत्र की शुरुआत की। प्रो. डॉ. दीपिका ने स्पीकिंगक्यूब के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और एआई के माध्यम से भावनात्मक कल्याण पर अपने विचार साझा किये और फिर सत्र की कमान प्रो. डॉ. रीता कुमार को सौंपी गई। डॉ. रीता, सम्मेलन की अध्यक्ष, स्पीकिंगक्यूब सलाहकार, मनोविज्ञान विभाग की प्रोफेसर एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा ने सम्मेलन के उद्देश्य और लक्ष्यों और वर्तमान परिदृश्य में विषय के महत्व के बारे में चर्चा की।

उत्तरांचल विश्वविद्यालय के कुलपति और सम्मेलन के संरक्षक प्रो. डॉ. धर्म बुद्धि ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया। डॉ. धर्म बुद्धि ने प्रतिभागियों को वर्तमान दुनिया में एआई के महत्व के बारे में बताया।

प्रो. डॉ. नील कोब्रिन, माननीय अतिथि, अध्यक्ष, एकेडमी ऑफ माइंडफुल साइकोलॉजी, कैलिफोर्निया, यूएसए ने वर्तमान दुनिया में मानव स्पर्श और एआई के महत्व के बारे में चर्चा की। सम्मेलन की मुख्य अतिथि राज्य मंत्री श्रीमती मधु भट्ट ने भावनात्मक कल्याण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महत्व पर अपने विचार साझा किए। श्रीमती मधु भट्ट ने मानसिक स्वास्थ्य को अधिक से अधिक संबोधित करने की आवश्यकता पर चर्चा की।

सत्र की शुरुआत मुख्य वक्ता प्रोफेसर डॉ. राजेश बहुगुणा, डीन लॉ विभाग, प्रो वाइस चांसलर, उत्तरांचल विश्वविद्यालय ने की। एएमयू के मनोविज्ञान विभाग की मुख्य वक्ता प्रो. डॉ. रूमाना सिद्दीकी ने मानसिक स्वास्थ्य में एआई की ताकत और कमजोरियों पर चर्चा की।

दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की प्रोफेसर प डॉ. हरप्रीत भाटिया ने भी एआई की ताकत और कमजोरी के बारे में और शोध और शिक्षा में एआई के संतुलित उपयोग पर जोर दिया।

हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के मनोचिकित्सा विभाग के प्रमुख प्रो. डॉ. प्रियरंजन अविनाश ने नैदानिक प्रक्रियाओं में एआई को शामिल करने की आवश्यकता पर चर्चा की। डॉ. अविनाश ने मानसिक स्वास्थ्य ऐप के बारे में भी बताया। उत्तरांचल विश्वविद्यालय के अनुसंधान और नवाचार के निदेशक, सम्मेलन अध्यक्ष प्रो. डॉ. राजेश सिंह ने मानसिक स्वास्थ्य और नवाचार के क्षेत्र में अधिक से अधिक शोध करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

रमैहा कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स के प्रबंधन और मनोविज्ञान विभाग के निदेशक प्रो. डॉ. रविशंकर एवी ने प्रौद्योगिकी निर्भरता और एआई के महत्व से संबंधित रिस्क फैक्टर्स के बारे में चर्चा की।

एक नजर

महाराष्ट्र में भाजपा ने जारी की 99 उम्मीदवारों की पहली सूची

नई दिल्ली। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। इसी क्रम में आज बीजेपी ने भी अपने प्रत्याशियों की पहली लिस्ट जारी कर दी है। इस लिस्ट में बीजेपी ने 99 प्रत्याशियों के नाम घोषित किए हैं। उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पार्टी ने नागपुर दक्षिण-पश्चिम सीट से टिकट दिया है। इस लिस्ट में कई नए चेहरों को मौका दिया गया है, जबकि कुछ जगहों पर मौजूदा विधायकों के टिकट काटे गए हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले को कामठी से टिकट दिया गया है। नंदुरबार से विजय कुमार गवित, धुले से अनूप अग्रवाल और मंगल प्रभात लोढ़ा को मालावार हिल्स सीट से टिकट दिया गया है। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए वरिष्ठ नेता अशोक चव्हाण की बेटी श्रीजया चव्हाण को पार्टी ने भोकर से चुनाव मैदान में उतारा है। पार्टी की पहली सूची में श्रीजया सहित 13 महिलाओं को उम्मीदवार बनाया गया है। विधायक गणपत गायकवाड़ की पत्नी सुलभा गायकवाड़ को कल्याण से उम्मीदवार घोषित किया गया है। भाजपा ने शहादा से राजेश उदेसिंह पाडवी, नंदुरबार से विजय कुमार गावित, धुले शहर से अनूप अग्रवाल, सिंदखेड़ा से जयकुमार जितेंद्र सिंह रावल, शिरपुर से काशीराम वेचन पावरा, रावेर से अमोल जावले, भुसावल से संजय वामन सावकारे को टिकट दिया है।

वहीं, अमगांव से संजय हनवंतराव पुरम्, आर्मोरी से कृष्णा दामाजी गजबे, बल्लारपुर से सुधीर सच्चिदानंद मुनगंटीवार, चिमूर से बंटी भांगडिया, वानी से संजीव रेड्डी बापुराव बोडकुरवार, रालेगांव से डॉ. अशोक रामादी उइके, यवतमाल से मदन मधुकरराव येरवर को चुनावी मैदान में उतारा गया है। इसके अलावा भाजपा ने जलगांव शहर से सुरेश दामू भोले, चालीसगांव से मंगेश रमेश चव्हाण, जामनेर से गिरीश दत्तात्रेय महाजन, चिखली से श्वेता विधाधर महाले, खामगांव से आकाश पांडुरंग फुंडकर, जलगांव से डॉ. संजय श्रीराम कुटे, अकोला पूर्व से रणधीर प्रह्लादराव सावरकर, धामगांव रेलवे से प्रताप जनार्दन अडसद, अचलपुर से प्रवीण तायडे, देवली से राजेश बकाने, हिंगणघाट से समीर कुणावार, वर्धा से डॉ. पकंज राजेश भोयर, हिंगना से समीर दत्तात्रेय मेघे, नागपुर दक्षिण से मोहन गोपालराव माते, नागपुर पूर्व से कृष्ण पंचम खोपड़े, तिरोरा से विजय भरतलाल रहांगडाले, गोंदिया से विनोद अग्रवाल को उम्मीदवार बनाया है।

इजराइल ने हिज्बुल्लाह के सेन्ट्रल कमांड सेंटर को उड़ाया

नई दिल्ली। इजराइल ने रविवार को लेबनान की राजधानी बेरूत में हिज्बुल्लाह के कमांड सेंटर और एक भूमिगत हथियार निर्माण इकाई पर भीषण हमला किया है। इजराइल रक्षा बल ने कहा है, कि उसने हवाई हमले करने से पहले लोगों को निकालने के आदेश दिए थे।

सेना ने एक बयान में कहा, आज सुबह आईएएफ (इजराइली वायु सेना) ने बेरूत में हिज्बुल्लाह के खुफिया मुख्यालय के एक कमांड सेंटर और एक भूमिगत हथियार कार्यशाला पर खुफिया जानकारी के आधार पर हमला किया।ष् वहीं, लेबनान के सरकारी मीडिया ने रविवार की सुबह हारेट हरेक में दो और हदाथ में एक इजराइली हमले की खबर दी है, ये सभी हमले हिज्बुल्लाह के दक्षिणी बेरूत के गढ़ दहियाह में हुए हैं। इजराइली सेना ने दक्षिणी लेबनान में अलग-अलग हमले किए, जिसमें हिज्बुल्लाह के तीन प्रमुख कार्यकर्ता मारे गए। मारे गए आतंकवादियों की पहचान हिज्बुल्लाह के दक्षिणी मोर्चे के वरिष्ठ सदस्य अल-हज्ज अब्बास सलामेह, संचार विशेषज्ञ रेडा अब्बास औदा और हथियार निर्माण इकाई में काम करने वाले अहमद अली हुसैन के रूप में हुई है।

आधिकारिक राष्ट्रीय समाचार एजेंसी ने कहा है, कि युद्धक विमानों ने नबातियेह शहर पर सात बार हमला किया, जिसमें एक रिहायशी इमारत भी शामिल है, बचावकर्मी अभी भी मलबे के नीचे जीवित बचे लोगों की तलाश कर रहे हैं। एनएनए ने कहा कि ष्इजरायली सैनिकों ने मैस अल-जबल के तराश इलाके को उड़ा दिया, एक सीमावर्ती गांव जहां हिज्बुल्लाह ने इजराइली सैनिकों के साथ संघर्ष किया था। कहा गया है, कि ये हमले ष्अत्यधिक विस्फोटक पदार्थों सेष किए गये । एनएनए ने कहा कि सैनिकों ने पास के ब्लिडा गांव में कब्रिस्तान को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया। वहीं, लेबनान की तरफ से इजराइल में 30 रॉकेट्स दागे गये हैं। रॉकेट दागे जाने की घटना तब हुई जब अपर गैलिली क्षेत्र में दोपहर करीब 12:30 बजे शत्रु विमानों के सायरन सक्रिय हो गए। सेना ने कहा, कि कुछ प्रक्षेपास्त्रों को एयर डिफेंस ने रोक दिया और अन्य क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गए, लेकिन किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

उत्तराखण्ड को ऊर्जा प्रदेश बनाने के लिए विद्युत निगमों को पूरी सक्रियता से सहयोगी बनना होगाः सीएम धामी

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पिटकुल द्वारा उत्तराखण्ड शासन को लाभांश के रूप में 11 करोड़ की धनराशि का चेक प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय में 11 करोड़ का लाभांश का चेक प्रबंध निदेशक पिटकुल ने सौंपा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि उत्तराखण्ड को ऊर्जा प्रदेश बनाने के लिए विद्युत निगमों को पूरी सक्रियता से सहयोगी बनना होगा। राज्य स्थापना की मूल संकल्पना में उत्तराखण्ड को ऊर्जा प्रदेश बनाना था। उन्होंने कहा कि ऊर्जा और वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा लगातार कार्य किये जा रहे हैं। राज्य सरकार का प्रयास है कि आगामी पांच सालों में उत्तराखण्ड में राज्य की मांग के हिसाब से ऊर्जा का उत्पादन हो। ऊर्जा के क्षेत्र में राज्य को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तेजी से कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने पिटकुल के अधिकारियों को निर्देश दिये कि सितम्बर 2024 में पिटकुल के जिन 05 नये उपकेन्द्रों का शिलान्यास किया गया उनके कार्यों में तेजी लाई

26.99 करोड़ की तुलना में वित्तीय वर्ष 2023-24 में रू0 141.67 करोड़ का

❑पिटकुल ने 11 करोड़ का लाभांश चेक सीएम धामी को सौंपा

लाभ अर्जित किया। विगत 03 वर्षों से उत्तराखण्ड शासन को प्रत्येक वर्ष रू० 5 करोड़ का लाभांश दिया गया था। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व एवं निर्धारित राष्ट्रीय मानकों 98 प्रतिशत से अधिक होने के फलस्वरूप पिटकुल को प्राप्त होने वाली प्रोत्साहन धनराशि के एक तिहाई भाग को विद्युत टैरिफ में छूट के रूप में सीधे दिये जाने से विद्युत उपभोक्ताओं को लाभ प्राप्त हो रहा है।

इस अवसर पर अपर सचिव मनमोहन मैनाली, निदेशक पिटकुल जी. एस. बदियाल, पिटकुल से श्री अरूण सबरवाल, मनोज कुमार श्रीमती शालू जैन, पंकज कुमार उपस्थित थे।

श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर में चोरी के आरोप में एक डॉक्टर सहित 4 लोग हिरासत में

संवाददाता

कोच्चि। केरल के प्रसिद्ध श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर से कांस्य पात्र चुराने के आरोप में हरियाणा से 4 लोगों को हिरासत में लिया गया है। आरोपियों में से एक डॉक्टर है, जिसके पास ऑस्ट्रेलिया की नागरिकता है। जैसे ही बर्तन गायब हुआ, मंदिर के अधिकारियों ने पुलिस को सूचित किया, जिसने सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से आरोपी की पहचान की।

पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। स्थानीय भाषा में उरुली कहे जाने वाले पारंपरिक बर्तन का उपयोग प्राचीन मंदिर में पूजा और अनुष्ठानों के लिए किया जाता था। पुलिस ने पुष्टि की कि आरोपियों की पहचान कर ली गई है और हरियाणा पुलिस के सहयोग से उन्हें हिरासत में ले लिया गया है, लेकिन उन्होंने ज्यादा जानकारी नहीं दी।

गुलदार ने 13 वर्षीय बच्ची को बनाया अपना निवाला

संवाददाता

टिहरी। टिहरी के भिलंगना ब्लॉक में गुलदार ने एक बच्ची को अपना निवाला बनाया, ग्रामीणों ने उसका शव बरामद कर लिया है।

मिली जानकारी के अनुसार भिलंगना ब्लॉक तिहरे गढ़वाल के महर गांव में वीरेंद्र कैंत्यूरा की 13 साल की बेटी साक्षी को गुलदार ने उस समय जबड़े मे भींच लिया जब वह गांव की कितने की दुकान से घर का सामान लेकर लौट रही थी। घटना शनिवार देर शाम की बताई जा रही है जब दिन के समय लगभग 4.30 बजे बच्ची साक्षी गांव की दुकान से अपने घर लौट रही थी। इस दौरान अचानक गुलदार ने बच्ची पर हमला कर दिया और उसे घसीटकर जंगल की ओर ले गया। ग्रामीणों और परिवार को पता चलने पर बच्ची की तुरंत खोजबीन शुरू की गई और वन विभाग को सूचना दी गई। इसके बाद गांव वालो को बच्ची का शव घर से लगभग 50 मीटर दूर जंगल से बरामद हुआ। इस दर्दभरी घटना के बाद गांव में मातम पसरा हुआ है और लोग सहमे हुए हैं।

आबादी क्षेत्र में गुलदार के हमलों की यह पहली घटना नहीं है। पिछले तीन महीनों में ही इस क्षेत्र में गुलदार ने तीन बच्चों को अपना शिकार बनाया है। जिससे इन घटनाओं से क्षेत्रवासियों में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि बच्चों और महिलाओं का अकेले घर से बाहर निकलना अब बहुत मुश्किल हो गया है जो कि बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है।

ग्रामीणों का वन विभाग की लापरवाही

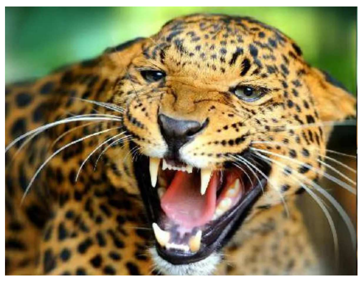

पर आरोप लगाया है। उनका कहना है कि वन विभाग को कई बार गुलदार की सक्रियता की जानकारी समय से दे दी गई थी। परंतु विभाग भी भी निष्क्रिय नजर आ रहा है। वन विभाग का कहना है कि गुलदार को पकड़ने के लिए पिंजरे लगाए गए हैं और क्षेत्र में गश्त बढ़ाई गई है। इसके अलावा, वन्यजीव विशेषज्ञों की टीम को भी बुलाया गया है और गाँव मे शूटर तैनात किये गए हैं।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, एडवोकेट
बैजनाथ, एडवोकेट

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।